सेन्ट्रल मंथन

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

खण्ड 9 • अंक - 4
मार्च - 2025

अनुपालन एवं जोखिम

विशेष आकर्षण :

कासा जमा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

G20
भारत 2023 INDIA

''कर्तव्येन कर्ताभि रक्षयते''
एम. वी. राव
ई. रतन कुमार

दिनांक 17 जनवरी 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के राँची क्षेत्रीय कार्यालय का अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याण संबंधी संसदीय समिति के अध्ययन दौरे में सहभागिता करने के पश्चात क्षेत्रीय कार्यालय रांची की ई-पत्रिका 'सेन्ट जोहार' का विमोचन करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

Grand Inauguration
World's 1st AI Based Gold Loan Disbursing
ATM MACHINE

हैदराबाद अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालय वारंगल में आयोजित क्रेडिट कैम्प का उद्घाटन करते हुए माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव. इस अवसर पर माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा एआई आधारित स्वचालित स्वर्ण ऋण मशीन का उद्घाटन किया गया.

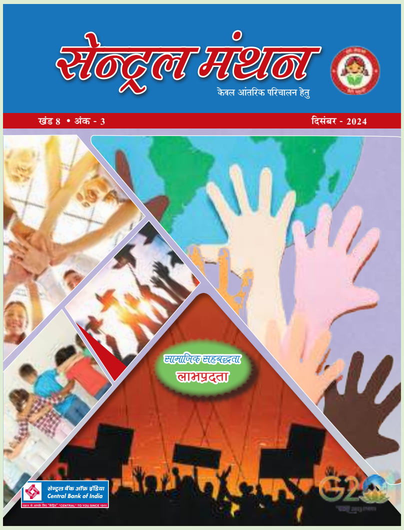

प्रधान संरक्षक

श्री एम वी राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री एम वी मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

श्री महेन्द्र दोहरे
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

सुश्री पॉपी शर्मा
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

श्री हितेन्द्र धूमाल

श्री अमित कुमार झा

सुश्री साक्षी राय

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह-पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)
प्रकाशन तिथि : 07.मई 2025 • खण्ड 9 • अंक - 1 • मार्च, 2025

विषय-सूची

- ▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश 2
- ▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 3
- ▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा का संदेश 4
- ▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश 5
- ▶ माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश 6
- ▶ संपादकीय 7
- ▶ पतझड़ का मौसम 8
- ▶ आखिरी भाषण 9
- ▶ आधुनिक बैंकिंग: एक बदलता स्वरूप 11
- ▶ डिजिटलीकरण के इस दौर में राजभाषा की सार्थकता 12
- ▶ एमएसएमई - भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका 14
- ▶ अपने ही देश में अंग्रेज़ियत से जूझती हिंदी 16
- ▶ बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता 18
- ▶ एस.एम.ए - कविता 19
- ▶ 15 वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन... 20
- ▶ लोक भविष्य निधि खाते (पब्लिक प्रोविडेंट फण्ड खाते).... 24
- ▶ कासा जमा.. 26
- ▶ आपका सच्चा जीवन साथी: आपका शरीर 28
- ▶ अन्तर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 30
- ▶ व्यंजन विधि 31
- ▶ राजभाषा गतिविधियां 32
- ▶ विभिन्न अंचलों में महिला दिवस का आयोजन 34
- ▶ केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित महिला दिवस 36

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा
उचिता ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाउण्ड, सेनापती बापत मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

अभी-अभी संपन्न मार्च 2025 तिमाही के शानदार वित्तीय परिणामों के लिए मैं प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूं. मैं आशा करता हूं कि आनेवाले समय में भी सभी सेन्ट्रलाइट अपने परिश्रमपूर्ण कार्यों से अपने प्रिय बैंक को सफलता के नए शिखर की ओर ले जाएंगे.

बैंकिंग प्रणाली में सरकारी निर्देशों, नियमों, अधिनियमों और विभिन्न विनियामकों (रेगुलेटरों) द्वारा निर्धारित विनियमों (रेगुलेशन) के अनुसार कार्य किया जाता है. इन्हीं के अनुसार बैंक की विभिन्न नीतियां बनाई जाती हैं. बैंक में कार्यरत कार्मिकों को इन्हीं नीतियों और नियमों का अनुपालन करना अनिवार्य होता है.

बैंकिंग प्रणाली में नीति और नियम के अनुपालन में कोई भी चूक व कमी बैंक को एवं संबंधित कार्मिक को जोखिम में डाल सकती है. बैंकिंग के हर स्तर पर सभी संबंधित कर्मचारियों को निर्धारित नियमों की पूर्ण जानकारी होनी आवश्यक है जिसके लिए समय-समय पर उन्हें प्रशिक्षण इत्यादि के माध्यम से अपडेट कराया जाता रहा है. बैंक भी समय-समय पर विभिन्न पत्रों, परिपत्रों के माध्यम से सूचनाएं प्रदान करता रहता है. प्रत्येक कार्मिक को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि-

'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'

बैंकिंग व्यवस्था वित्तीय लेन-देन से संबंधित है. जरा सी असावधानी बड़ी हानि करवा सकती है. इसलिए प्रत्येक कार्मिक निर्धारित नियमों का अनुपालन करते हुए कार्य करे जिससे अपने प्रिय बैंक को और स्वयं कार्मिक को भी जोखिम से बचाया जा सके.

इसके अतिरिक्त बैंक के व्यवसाय की प्रगति के लिए आवश्यक है कि बैंक की जमाओं में निरंतर वृद्धि हो, विशेषकर कासा जमाओं में तीव्र वृद्धि आवश्यक है. यह वर्ष बैंक ने व्यवसाय वृद्धि वर्ष योबा 156 के रूप में मनाना निर्धारित किया है जिसके अनुसार प्रत्येक शाखा द्वारा करंट डिपॉजिट में न्यूनतम रू. 1.00 करोड़, बचत खाते में न्यूनतम रू. 5.00 करोड़ एवं सावधि जमा में न्यूनतम रू. 6.00 करोड़ की वृद्धि आवश्यक है.

ध्यान रखिए- उत्कृष्ट ग्राहक सेवा, लक्ष्य के प्रति सुनियोजित कार्य से ही व्यवसाय बढ़ता है तथा बैंक प्रगति करता है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं अपने सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव के कुशल नेतृत्व में अभी-अभी संपन्न तिमाही एवं वित्तीय वर्ष के शानदार कार्यकारी परिणामों के लिए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूं.

देश का प्रथम स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अब निरंतर प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. प्रगति की गति बनाए रखने के लिए हमारे सभी कार्मिकों द्वारा निर्धारित नियमों और निर्देशों का दृढ़ अनुपालन करना आवश्यक होता है.

बैंकिंग के वर्तमान दौर में अनुपालन (Compliance) बहुत महत्वपूर्ण है. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक होने के फलस्वरूप हमारे बैंक को सरकार एवं रेग्युलेटर की नीतियों और निर्देशों के अनुसार कार्य करना अनिवार्य होता है. नीति, विनियम, नियम एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन करने का सबसे बड़ा लाभ ये होता है कि इससे जोखिम न्यूनतम हो जाता है. अनुपालन में चूक होने का आशय है जोखिम को आमंत्रित करना. इसलिए जेखिम से बचने के लिए नीति और निर्देशों का पूर्ण अनुपालन किया जाना आवश्यक होता है.

अंचल प्रमुख, क्षेत्रीय प्रमुख, शाखा प्रमुख एवं अन्य सभी कार्मिक, अपने-अपने स्तर पर अनुपालन के लिए पूर्ण उत्तरदायी होते हैं. प्रत्येक कार्मिक को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अनुपालन संस्कृति के प्रति सहकर्मियों को निरंतर जागरूक करते रहना आवश्यक है.

नया वित्त वर्ष 2025-26 प्रारंभ हो चुका है जिसे हमारे बैंक ने व्यवसाय वृद्धि वर्ष योबा 156 के रूप में मनाने का निर्णय लिया है, जिसके अनुसार हमारी प्रत्येक शाखा द्वारा करंट डिपॉजिट में न्यूनतम रू. 1.00 करोड़, बचत खाते में न्यूनतम रू. 5.00 करोड़ एवं सावधि जमा में न्यूनतम रू. 6.00 करोड़ की वृद्धि करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है.

यह ध्यान रखिए, बैंक की प्रगति के लिए बैंक का व्यवसाय बढ़ाना आवश्यक है, जो प्रत्येक सेन्ट्रलाइट के लिए भी लाभदायक होगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम, मैं माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके कुशल नेतृत्व में दिनांक 31.03.2025 को समाप्त वित्त वर्ष में बैंक ने उत्कृष्ट कार्य परिणाम दर्शाए हैं.

जैसा कि हम जानते हैं कि बैंकिंग व्यवसाय में वित्तीय जोखिम की अत्यधिक संभावना होती है और आज के डिजिटल युग में, कोई भी जानकारी अथवा गलत सूचना तीव्रता से फैलती है जो ग्राहकों के विश्वास को प्रभावित कर सकती है. कोई भी सामग्री - चाहे वह सोशल मीडिया, मैसेजिंग प्लेटफॉर्म या सार्वजनिक मंचों पर हो - जो हमारे बैंक की सेवाओं, एटीएम संचालन या तकनीकी कार्यप्रणाली को गलत तरीके से प्रस्तुत करती है, उसका त्वरित निपटान किया जाना चाहिए. अन्यथा यह बैंक के लिए जोखिम पूर्ण या हानिकारक सिद्ध हो सकता है.

आपका उत्तरदायित्व तीन स्तरों पर है:

1. सत्यापित करें और स्पष्ट करें - जहाँ भी संभव हो, तथ्यों और सही विवरणों के साथ ऐसी किसी भी गलत सूचना का तुरंत जवाब दें.

2. बिना देरी के आगे बढ़ाएँ - यदि मामला संवेदनशील है, सूचना बहुत लोगों तक पहुंच रही है या बैंक की प्रतिष्ठा से जुड़ा है, तो इसे उचित माध्यम से तुरंत केन्द्रीय कार्यालय को अवगत कराएं.

3. प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को सरकारी एजेंसियों, विनियामकों, उच्च अधिकारियों, कार्यालयों से प्राप्त नीतियों, नियमों, विनियमों तथा निर्देशों का पालन करना चाहिए.

हमें अपने ग्राहकों के विश्वास को दृढ़ बनाए रखने के लिए सतर्क, सक्रिय एवं एकजुट रहना चाहिए, साथ ही अनुपालन संस्कृति का उचित तरीके से पालन करना चाहिए.

साथ ही, मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा कि वर्तमान वर्ष हमारे बैंक के लिए योबा 156 के रूप में मनाया जा रहा है. शेयर बाजार में मौजूदा अनिश्चितताओं के साथ, निवेशकों की भावनाएं स्थिर और सुरक्षित बैंकिंग जमाओं की ओर सकारात्मक रूप से बढ़ रही हैं. यह हमारे लिए ग्राहकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने तथा हमारी जमा उत्पादों की व्यापक श्रेणी से व्यवसाय वृद्धि करने का उपयुक्त समय है.

आइए बाजार की इस अनुकूल स्थिति का लाभ उठाते हुए वर्तमान और संभावित ग्राहकों से बड़े स्तर पर संपर्क करें, जिससे हमारी जमाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा, विश्वसनीयता एवं धनवृद्धि के अवसरों को और सुदृढ़ किया जा सके.

हार्दिक शुभकामनाएँ.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं अपने माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव के सक्षम नेतृत्व में बैंक द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान प्रदर्शित शानदार परिणामों के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूं.

बैंकिंग व्यवसाय में सदैव आर्थिक जोखिम की संभावना बनी रहती है. ये आर्थिक जोखिम संस्थान को वित्तीय हानि तो पहुंचाते ही हैं साथ में संस्थान की उज्जवल छवि पर भी कलंक लगाने का कार्य करते हैं. यही नहीं कई बार हमारे सम्मानित ग्राहकों को भी इससे आर्थिक हानि की संभावना बनी रहती है, और तो और ऐसी हानि के परिणाम स्वरूप संबंधित कार्य से सहबद्ध कर्मचारियों को भी क्षति पहुंचती है. ध्यान देने वाली बात है कि बैंकिंग प्रणाली में सावधानी ही सुरक्षा है के नियम का अनुपालन करना चाहिए.

बैंक में अनुपालन पद्धति के अनुरूप कार्य करने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे बैंक कर्मचारी एवं ग्राहक सबका हित सुरक्षित होता है और जोखिम की संभावना नगण्य हो जाती है.

आप सब जानते ही हैं कि बैंकिंग के लिए जमाएं विशेषकर कासा जमाएं कितनी महत्वपूर्ण है. इन कम लागत जमाओं के कारण बैंक की लाभ प्रदता बढ़ती है. इसलिए बैंक ने वर्तमान वित्त वर्ष को व्यवसाय वृद्धि का वर्ष (योबा 156) नाम दिया है, जिसके अनुसार प्रत्येक शाखा द्वारा करंट डिपॉजिट में न्यूनतम रू. 1.00 करोड़, बचत खाते में न्यूनतम रू. 5.00 करोड़ एवं सावधि जमा में न्यूनतम रू. 6.00 करोड़ की वृद्धि करना आवश्यक है.

आप सबको एक टीम के रूप में कार्य करते हुए योबा 156 को सफल बनाने के लिए पूर्ण लगन एवं निष्ठा के साथ एकजुट होकर कार्य करना चाहिए.

हार्दिक शुभकामनाएँ.

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

मैं आपनी बात का प्रारंभ माननीय एमडी एवं सीईओ सर तथा तीनों कार्यपालक निदेशकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए करना चाहती हूं जिनके कुशल निर्देशन में हमारे प्रिय बैंक ने वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही के दौरान शानदार परिणाम दर्शाए हैं. साथ ही मैं प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को भी उनके सार्थक प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देती हूं.

एक वित्तीय संस्थान के लिए आवश्यक है कि वो निरंतर प्रगति करे, उसका व्यवसाय निरंतर बढ़े. लाभप्रदता भी लगातार बढ़ती जाए. बैंक के व्यवसाय वृद्धि में उसके कर्मचारियों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है. संस्थान की व्यवसाय वृद्धि में एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि बैंक का कार्य नियमों और नीतियों के अनुरूप हो और सभी निर्देशों का अनुपालन किया जाए. आधुनिक बैंकिंग में अनुपालन संस्कृति अत्यंत महत्वपूर्ण हो चुकी है. इसके अन्तर्गत प्रत्येक कार्मिक को नियमों, विनियमों, निर्देशों का पूर्ण अनुपालन करते हुए कार्य किया जाना अपेक्षित होता है.

बैंकिंग व्यवसाय में कासा जमाओं का महत्व भी सर्वविदित है, चूंकि ये जमाएं कम लागत की होती हैं, इससे बैंक की लाभप्रदता बढ़ती है, इसलिए बैंक कासा जमाओं की वृद्धि पर विशेष ध्यान देता है. बैंक के प्रत्येक कर्मचारी को भी इस ओर ध्यान देना आवश्यक होता है. इस परिप्रेक्ष्य में हमारा बैंक इस वर्ष को व्यवसाय वृद्धि वर्ष योबा 156 के रूप में मना रहा है, अर्थात हमारी प्रत्येक शाखा को ₹ 1 करोड़ करेंट अकाउंट, ₹ 5 करोड़ सेविंग अकाउंट एवं ₹ 6 करोड़ एफडी जमा को बढ़ाना है. यानी कुल मिलाकर प्रत्येक शाखा को न्यूनतम ₹12 करोड़ की जमा वृद्धि करनी है. आप में पूरी क्षमता है. इसलिए विश्वास है कि आप ये कर सकते हैं.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट योबा 156 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर संभव योगदान प्रदान करे, और बैंक के व्यवसाय वृद्धि में अपना पूर्ण सहयोग दे.

ध्यान रखिए, बैंक बढ़ेगा तो हम बढ़ेंगे.

आने वाले पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं दिनांक 31 मार्च 2025 को समाप्त तिमाही में बैंक के शानदार कामकाजी परिणामों के लिए सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव तथा तीनों माननीय कार्यपालक निदेशकों के कुशल नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

विगत कुछ वर्षों से हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. हमारा वर्तमान उच्च प्रबंधन बैंक को आगे ले जाने की दिशा में निरंतर सकारात्मक पहल कर रहा है. इसके उत्साहवर्द्धक परिणाम हमें प्राप्त हो रहे हैं. हम सबका कर्तव्य है कि हम उच्च प्रबंधन के निर्देशों का पूर्णत: अनुपालन करें. वस्तुत: हमें अनुपालन संस्कृति का पालन करते हुए आगे बढ़ना चाहिए. अनुपालन कार्यालयीन जीवन का अनुशासन होता है तथा अनुशासन का संस्था की प्रगति में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है जिससे अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं.

इसके अतिरिक्त अनुपालन संस्कृति को अपनाने से वित्तीय जोखिम भी न्यूनतम हो जाता है. उल्लेखनीय है कि बैंकों में बाह्य एवं आंतरिक शक्तियां हमारे तंत्र की दुर्बलताओं का लाभ उठाकर वित्तीय धोखाधड़ी करने के लिए प्रयासरत रहती है. अनुपालन संस्कृति को अपनाने से ही इस प्रकार के जोखिमों से बचना संभव होता है. यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे सभी सहकर्मी भी अनुपालन संस्कृति को अपना रहे हैं. इसमें कहीं कोई चूक संस्था के लिए हानिप्रद हो सकती है.

हमारा बैंक व्यवसाय में आगे बढ़ता जा रहा है. इसे और सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक है कि हमारे पास कम लागत जमाएं अधिक से अधिक हों. इसके लिए उच्च प्रबंधन ने वर्तमान वित्त वर्ष को व्यवसाय वृद्धि का वर्ष (योबा 156) के रूप में घोषित किया है. हम सभी को इस ओर विशेष ध्यान देकर योबा 156 के सभी लक्ष्यों को बड़े मार्जिन से प्राप्त करना चाहिए.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(राजीव वार्ष्णेय)
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

पतझड़ का मौसम

चिड़ियों की चहचहाहट से रचना की नींद खुली, देखा तो खिड़की पर उजाला था. सुबह होने वाली थी या हो चुकी है, सोचते हुए रचना ने घड़ी की तरफ़ देखा तो सात बज चुके थे. बड़बड़ाते हुए रचना उठी और किचन की तरफ़ मुड़ गई. गैस के चूल्हे पर एक तरफ़ दाल का कुकर चढ़ा कर दूसरी तरफ़ चाय बना कर चाय का प्याला हाथ में लिए रचना बालकनी में जा खड़ी हुई. पतझड़ का मौसम था. ठंडी हवाएं चल रहीं थीं, पेड़ों के झुरमुट से होते हुए सूरज की किरणें सीधे अशोक के वृक्ष पर पड़ रहीं थीं. रचना की नजर अशोक के वृक्ष पर ठहर गई, अशोक का वृक्ष रचना को कुछ नया मालूम पड़ता था, पर ये वृक्ष तो वही था बस कुछ कोंपलें नई थीं. रचना कौतूहल से वृक्ष को निहारने लगी, अशोक के वृक्ष का रंग पहले से ज़्यादा चमकीला हो गया था, पहले की तरह उसकी पत्तियाँ धूल से भरी नहीं थी. अशोक के वृक्ष पर नई पत्तियों का राज हो गया था. अशोक के वृक्ष के नए रूप को देखते हुए रचना की नजर सेमल के पेड़ पर पड़ी. पेड़ पर सिर्फ़ फूल थे, एक भी पत्ती न थी. पेड़ों के अंदर इस बदलाव को देख कर रचना को याद आया ये तो पतझड़ का मौसम है और वो गहरी सोच में डूब गई कि कैसे पतझड़ के मौसम में कुछ पेड़ पूरी तरह झड़ जाते है जैसे सेमल का पेड़, कुछ पेड़ों पर नई कोपलें कब्ज़ा कर लेती है जैसे अशोक का पेड़. कैसे प्रकृति नए को स्वीकार करती है. कितने प्यार के साथ अशोक के वृक्ष की पुरानी पत्तियाँ नई पत्तियों को जगह देती हैं, उन्हें अवसर देती हैं. खुल के ख़ुद का नया रूप रंग दुनिया को दिखाने का, क्या होता अगर पुरानी पत्तियाँ नई पत्तियों को ठहरने ही न देतीं, क्या ये वृक्ष इस तरह जगमगाता शायद नहीं कुछ दिन बाद झड़ के सूख जाता, प्रकृति कितनी सरल है. नए को मौक़ा मिलता है, बढ़ने का अपनी जगह बनाने का, इंसानी फ़ितरत इसके विपरीत कभी नए को मौका देना ही नहीं चाहती. क्या अशोक के वृक्ष की तरह हमें नए को मौका नहीं देना चाहिए ? नए को मौका देना होगा, उसे बाँध के नहीं रखना है. उसे खिलने देना है, उसे उड़ने देना है, उसकी बात सुननी है, उसे आगे रखना है, तभी तो इंसान ज़िंदा रह पाएंगे बरसों तक इस अशोक के वृक्ष की तरह”.

कुकर की सीटी बजते ही रचना सोच से बाहर आकर मुस्कुराने लगी और बोली पतझड़ का मौसम ख़त्म होना नहीं, खिलना है.

अंकिता जैन
सीजीटीएमएसई, भोपाल

आखिरी भाषण

सत्यमंगलम क्षेत्र के बाहरी इलाके में सत्यमंगलम सरकारी स्कूल में तुलु भाषा के शिक्षक परशुराम रहते थे. 58 वर्षीय साधारण व्यक्ति, अपनी संस्कृति पर गर्व करने वाले साथ ही सीखने के शौकीन. वह आमतौर पर हर दिन नहाने के लिए कुएं में गोता लगाते थे. पिछले साल 30 अप्रैल को श्री गौड़ा सेवानिवृत्त हुए थे. स्कूल के अंग्रेजी शिक्षक गौड़ा बहुत लोकप्रिय थे क्योंकि वे वहां आने वाले शीर्ष सरकारी अधिकारियों से संवाद करते थे. उस क्षेत्र में गौड़ा का नाम मशाल की तरह था. सेवानिवृत्ति के उस दिन गौड़ा ने इस दुनिया में अंग्रेजी के महत्व के बारे में एक शानदार भाषण दिया था. तब से परशुराम अपना सेवानिवृत्ति भाषण अंग्रेजी में देना चाहते थे. गौड़ा के बाद इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति अंग्रेजी पढ़ाने को तैयार नहीं था. परशु ने अब सभी के साथ गलत ही सही लेकिन निर्भीकता से अंग्रेजी में बात करने का अवसर चाहा. लेकिन उसे जो प्रतिक्रिया मिली वह आम तौर पर हंसी थी. मई की बात है जब परशु और उसी स्कूल में गणित के शिक्षक मंजू वार्षिक पेपर सही कर रहे थे.

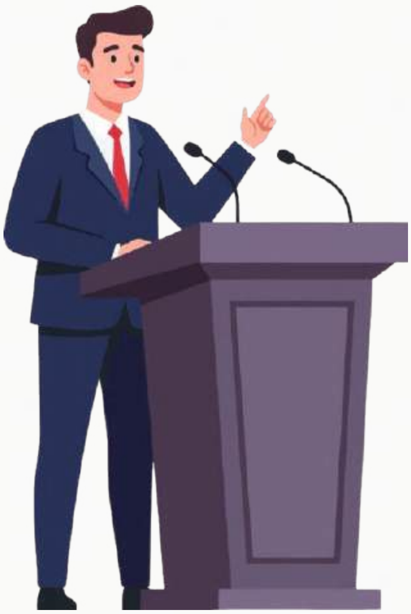

अचानक दोनों ने अपने जन्मदिन के बारे में बातचीत की. परशु का जन्मदिन दिसंबर में था, मंजू का अप्रैल में. मंजू ने परशु से कहा कि वह भाग्यशाली है कि उसे 6 महीने की सेवानिवृत्ति मिल गई. दिन बीत गया. अगले दिन एक डाकिया कार्यालय में आया और परशु को देखकर एक पत्र दिया. यह एक कार्यालय आदेश था इसलिए उसने अपने फॉर्म पर हस्ताक्षर करवा लिए थे. यह एक कार्यालय आदेश था और पत्र में यह लिखा है, “तुलु भाषा के विद्यार्थियों की संख्या हर साल कम होती जा रही है, इसलिए इस वर्ष तुलु शिक्षण का विषय नहीं होगा और आपको तुलु भाषा के अनुसंधान विभाग में स्थानांतरित किया जाता है. कृपया 5 जून को इसकी सूचना दें.” यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ, फिर भी वह शहर में अनुसंधान दल में शामिल हो गए.

तिमाही बीत गई. शिक्षक छमाही के लिए उत्तर पत्र सुधार शुरू करने के लिए तैयार हैं. दिन 24 दिसंबर था. दिन के करीब 2 बजे मंजू ने परशु को एक विशेष पोशाक में स्कूल में आते देखा. मंजू और अन्य साथी शिक्षकों ने पूछा कि क्या कोई विशेष बात है. परशु ने कहा कि यह उसकी सेवानिवृत्ति का दिन है. मंजू ने पूछा कि उन्हें सेवानिवृत्ति मिली या नहीं. चूंकि वह शिक्षक नहीं थे, इसलिए उन्हें सेवानिवृत्ति नहीं दी गई. 24 दिसंबर को उनकी सेवानिवृत्ति थी. परशु के अचानक रिटायरमेंट से दुखी मंजू शाम 5 बजे अपने दोस्त की रिटायरमेंट का जश्न मनाने गया. माइक सेट लगाए गए थे. गपशप हो रहे थे क्योंकि 6 महीने में परशु ने अंग्रेजी सीख ली होगी और उनका रिटायरमेंट भाषण शानदार होगा. चुटकुले आए जैसे कि यह अमेरिकी अंग्रेजी या ब्रिटिश अंग्रेजी थी.

यहाँ-वहाँ तेज़ हवा चल रही थी. परशु अपने कुएँ पर गया और अपनी मूल परंपरा के अनुसार आया. हवा की आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही थी. हर ओर सन्नाटा था. लेकिन परशु ने अपनी पूरी बात अपनी मातृभाषा तुलु में कही.

हालांकि निराश लोग उनके भाषण से जुड़े, लेकिन उनके भाषण की गहराई सिर्फ मंजू ही समझ पाए. भाषाएं खत्म हो रही हैं.

मनिकंदन एस.
परिवीक्षाधीन अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

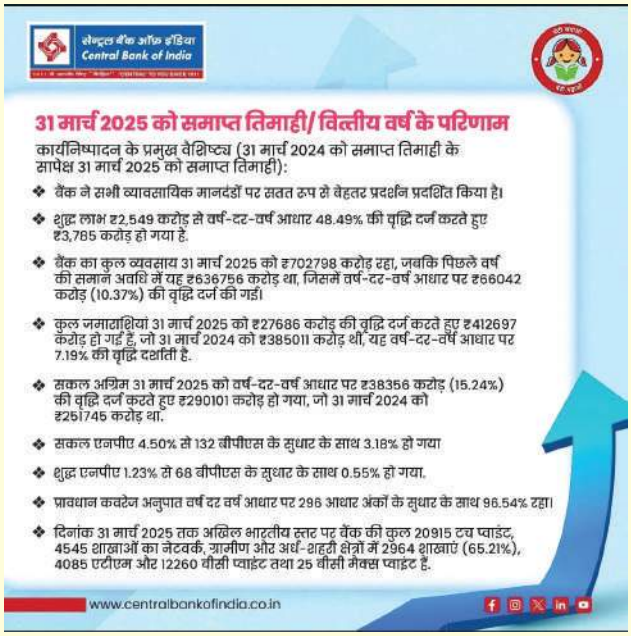

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

31 मार्च 2025 को समाप्त तिमाही/ वित्तीय वर्ष के परिणाम

कार्यनिष्पादन के प्रमुख वैशिष्ट्य (31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही के सापेक्ष 31 मार्च 2025 को समाप्त तिमाही):

- बैंक ने सभी व्यावसायिक मानदंडों पर सतत रूप से बेहतर प्रदर्शन प्रदर्शित किया है।
- शुद्ध लाभ ₹2,549 करोड़ से वर्ष-दर-वर्ष आधार 48.49% की वृद्धि दर्ज करते हुए ₹3,785 करोड़ हो गया है.
- बैंक का कुल व्यवसाय 31 मार्च 2025 को ₹702798 करोड़ रहा, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह ₹636756 करोड़ था, जिसमें वर्ष-दर-वर्ष आधार पर ₹66042 करोड़ (10.37%) की वृद्धि दर्ज की गई।
- कुल जमाराशियां 31 मार्च 2025 को ₹27686 करोड़ की वृद्धि दर्ज करते हुए ₹412697 करोड़ हो गई हैं, जो 31 मार्च 2024 को ₹385011 करोड़ थीं, यह वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 7.19% की वृद्धि दर्शाती है.
- सकल अग्रिम 31 मार्च 2025 को वर्ष-दर-वर्ष आधार पर ₹38356 करोड़ (15.24%) की वृद्धि दर्ज करते हुए ₹290101 करोड़ हो गया, जो 31 मार्च 2024 को ₹251745 करोड़ था.
- सकल एनपीए 4.50% से 132 बीपीएस के सुधार के साथ 3.18% हो गया
- शुद्ध एनपीए 1.23% से 68 बीपीएस के सुधार के साथ 0.55% हो गया.
- प्रावधान कवरेज अनुपात वर्ष दर वर्ष आधार पर 296 आधार अंकों के सुधार के साथ 96.54% रहा।
- दिनांक 31 मार्च 2025 तक अखिल भारतीय स्तर पर बैंक की कुल 20915 टच प्वाइंट, 4545 शाखाओं का नेटवर्क, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में 2964 शाखाएं (65.21%), 4085 एटीएम और 12260 बीसी प्वाइंट तथा 25 बीसी मैक्स प्वाइंट हैं.

www.centralbankofindia.co.in

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "सेंट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
BANKING

आधुनिक बैंकिंग : एक बदलता स्वरूप

बैंक किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं. देश में बैंकिंग व्यवस्था की शुरुआत को इतिहासकार लगभग 18वीं शताब्दी से ही मानते हैं. इसके बारे में कहा जाता है कि अंग्रेजों ने आधुनिक बैंकिंग प्रणाली को लाकर भारत की अर्थव्यवस्था में क्रांति कर दी थी. अंग्रेजों ने सुनियोजित तरीके से धन की उगाही के लिये तीनों प्रेसीडेंसियों मसलन मद्रास, बंबई और बंगाल में बैंकों की स्थापना की.

समय के साथ बैंकों का बदलता स्वरूप

नवीनतम तकनीकों ने बैंकिंग के क्षेत्र में क्रांति ला दी है. भारत में बैंकिंग क्षेत्र का डिजिटल परिवर्तन टेलीबैंकिंग, ऑनलाइन-बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग आदि के समानार्थी है. इस सदी के शुरुआती दौर में शुरू होने वाले बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल क्रांति ने बैंकों के साथ ग्राहकों की कमी को दूर करने पर ध्यान केंद्रित किया है.

- आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की जरूरतों में परिवर्तन जरुरी हो गया है. अब परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिंग अवधारणा मजबूत हुई है.
- आज तकनीक ने बैंकों के स्वरूप को एकदम बदल दिया है. इसमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं.
- मोबाइल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है. मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है. किसी भी समय खाते से पैसों को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि किया जा सकता है. यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती है.
- इसी प्रकार एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को बहुत हद तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है.
- कैशलेस अर्थव्यवस्था ने बैंकिंग स्वरूप में और बड़ा परिवर्तन किया है. इससे एक ओर जहाँ लोगों को लंबी कतारों से मुक्ति के साथ-साथ समय की बचत हुई तो वहीं दूसरी ओर कालेधन को रोकने में बहुत हद तक मदद भी मिली. इसके कारण अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता आयी. कैशलेस व्यवस्था आने के कारण रुपया लोगों के पास से तो हटा ही किन्तु उसका स्थान प्लास्टिक मुद्रा ने लिया.
- प्लास्टिक मुद्रा ने लोगों की समस्या के समाधान के साथ-साथ पर्यावरण को तो लाभ पहुँचाया ही इसके साथ ही साथ इससे अर्थव्यवस्था में तेजी भी आयी. कैशलेस अर्थव्यवस्था को पेमेंट्स बैंकों ने भी आगे बढ़ाने में मदद की है.
- लिहाज़ा समाज के हाशिये पर बैठे व्यक्तियों को आर्थिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये बैंकों ने समुचित प्रयास किया है. इस प्रयास में माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड बैंक यानि मुद्रा बैंक का गठन भी बहुत महत्त्व रखता है. यह सूक्ष्म इकाइयों के विकास तथा पुनर्वित्तपोषण से संबंधित गतिविधियों के लिये भारत सरकार द्वारा गठित एक नई संस्था है. इसी प्रकार स्वयं सहायता समूह भी वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं जो कि समाज के पिछड़े तबके के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

बैंक से अलर्ट्स प्राप्त करने के लिए बैंक रिकार्ड में अपना मोबाइल नंबर अद्यतन रखिए

आप एटीएम के माध्यम से भी अपने मोबाइल नंबर का अद्यतन कर सकते हैं.

तकनीक ने आसान की बैंकिंग, बीमा और निवेश की दुनिया

भारतीय अर्थव्यवस्था अनौपचारिक भुगतान के दायरे से निकल कर औपचारिक के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही है. इसमें तकनीक ने बेहतर भूमिका निभाई है. देश में जब प्रधानमंत्री जन धन योजना की शुरूआत हुई तो उस समय तकनीक ही थी कि रिकार्ड 38 करोड़ से भी ज्यादा खाते खोले गए. यही नहीं तकनीक से वित्तीय जगत का हर क्षेत्र बेहतर हो रहा है.

नया भारत: बैंकिंग सेवाएं सभी परिवारों तक पहुंची

आज, बैंकिंग सेवाओं की पहुंच भारत के सभी परिवारों तक है. वर्ष 2014 में शुरू की गई प्रधानमंत्री जन धन योजना इस बदलाव की महत्वपूर्ण ड्राइवर बनी और इस योजना के तहत रिकॉर्ड 38.06 करोड़ बैंक खाते खोले गए. यूपीआई और रूपे डेबिट कार्ड जैसी प्रमुख पहलों से इस प्रवृत्ति को और तेजी दी. इसी तर्ज पर, भारतनेट मिशन दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट पहुंचा रहा है, जिससे तकनीक से संचालित बीएफएसआई सेवाओं का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है.

आधुनिक बैंक: बटन टच करने पर उपलब्ध

भारत में इंटरनेट यूजर्स के बढ़ते आधार के साथ, बैंकों के रिटेल टचपॉइंट्स पर बहुत ज्यादा लोगों से डील नहीं करना होता. वे अब बड़े पैमाने पर इन ग्राहकों को अपने डिजिटल यानी स्मार्टफोन ऐप्लिकेशन पर प्राप्त करते हैं. यह ग्राहकों को विशेष रूप से इसके लिए समय निकाले बिना हर तरह का लेन-देन का अधिकार देता है. यूपीआई की तकनीकी खासियतों (जिसमें बैंक और नॉन-बैंक प्रोवाइडर्स में इंटरऑपरेबिलिटी शामिल हैं) ने लेन-देन की लागत के साथ इसमें लगने वाला वक्त भी काफी हद तक कम कर दिया है. भारत दूरदराज के क्षेत्रों के बीच एईपीएस (आधार-सक्षम भुगतान प्रणाली) द्वारा संचालित बायोमेट्रिक लेन-देन में वृद्धि देख रहा है.

ओपन बैंकिंग: नई संस्कृति विकसित हो रही है!

भारत भी अब ओपन बैंकिंग के विचार के प्रति खुल रहा है. आज जब बैंकों के पास एक बड़ा कस्टमर बेस और ऐतिहासिक डेटासेट उपलब्ध है, तकनीकी-संचालित स्टार्टअप और एनबीएफसी ने उनका उपयोग करने के लिए तकनीकी क्षमता विकसित की है. यह प्रवृत्ति भारत में बेहतर प्रोफाइलिंग, क्रेडिट अंडरराइटिंग और आधुनिक ग्राहकों के सामने आने वाली समस्याओं का सामना करने वाले उत्पादों के विकास के साथ वित्तीय सेवाओं के विस्तार को भी और गति देगा.

निरंतरता के साथ स्वीकार्यता बढ़ रही है

डिजिटल सेवाओं के विस्तार को संचालित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है स्वीकार्यता. उदाहरण के लिए, डिजिटल पेमेंट अपनाने के बाद तेजी आई. कोविड-19 लॉकडाउन में भी यही प्रवृत्ति देखी गई है. कोविड प्रकोप के मद्देनजर एईपीसीएस का उपयोग दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों को अपने घरों में बैठे-बैठे नकदी निकालने में मदद करने के लिए किया है. इस तरह के आयोजनों में एफआई की तकनीकी क्षमताएं बाजार की प्रवृत्ति को आकार देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं.

निष्कर्ष

गौरतलब है कि वैश्वीकरण के दौर में बैंकों का स्वरूप लगातार बदल रहा है. पहले जहाँ बैंकों में लंबी-लंबी कतारें लगी रहती थीं, वहीं अब तकनीक ने इस कार्य को सरल और सुगम बना दिया है. तकनीक का प्रयोग करके पेमेंट बैंकों ने इस कार्य को और आसान बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है. आधुनिक बैंकिंग विशेषकर कैशलेस अर्थव्यवस्था बैंकिंग लेन-देन के डिजिटलीकरण के दौर में चिंता का विषय जरूर है. परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने आईआईटी जैसे संस्थानों के साथ मिलकर विभिन्न तरीकों से इससे निपटने के प्रयास किये हैं. जन-धन योजना और डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर जैसी योजनाओं के माध्यम से बैंकिंग के जरिये वित्तीय समावेशन पर सरकार बहुत जोर दे रही है, क्योंकि दुर्गम और कठिन क्षेत्र होने के कारण कई क्षेत्रों में अभी भी बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं. सरकार ने बड़ी संख्या में बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट की नियुक्ति कर इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है. ये बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट बैंकों तथा ग्रामीण जनता के बीच कड़ी का काम करते हैं. इसी प्रकार बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के लिये हाल ही में सरकार ने तीन बैंकों के विलय का फैसला लिया है. कुल मिलाकर, भारत का आज का बैंकिंग स्वरूप बदलते परिवेश में नए कलेवर अपना रहा है. ऐसे में जरूरत इस बात की है कि यह कलेवर भारतीय जनता के सामाजिक-आर्थिक विकास को और बेहतर बनाने में अपनी भूमिका निभाए जिससे देश के लोगों के जीवन में खुशियाँ और समृद्धि आ सके .

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
अब ज़िंदगी आसान
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सुपर ऐप के साथ!
आसान बैंकिंग
डिपॉजिट, लोन और भुगतान कभी भी, कहीं भी करें.
स्मार्ट निवेश
म्युचुअल फण्ड आईपीओ और बेहतरीन निवेश विकल्प अपनाएं.
Cent eeZ
Mobile App
की हो रही है शानदार शुरुआत!
शॉपिंग पर खास फायदे
यात्रा, शॉपिंग और मनोरंजन पर शानदार छूट पाएं.
सुरक्षित भविष्य
जीवन और अन्य बीमा कवर से निश्चिंत रहें.
नया वित्तीय वर्ष
नए ऐप के साथ!
अपनी सुरक्षा के लिए सावधानी बरतें, Cent eeZ ऐप सिर्फ इन आधिकारिक स्रोतों से डाउनलोड करें
Google Play
App Store
किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें और व्हॉट्सऐप किसी भी अनजान स्रोत से APK फाइल डाउनलोड न करें.
अपनी डेबिट/क्रेडिट कार्ड की सीवीवी, पिन जैसी गोपनीय जानकारी किसी से साझा न करें.
हमारी वेबसाइट पर डिजिटल माध्यम से बचत खाता खोलें – www.centralbankofindia.co.in
टोल-फ्री नंबर – 1800 30 30

श्री संजय सरकार
शाखा प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, बरपेटा रोड

रक्त क्यारी
मक्का रक्त क्यारी
मक्का रक्त क्यारी
मक्का रक्त क्यारी

डिजिटलीकरण के इस दौर में राजभाषा की सार्थकता

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं. संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, जिससे प्रशासन और सरकारी कामकाज में इसका विशेष महत्व है. 21वीं सदी में तकनीकी क्रांति और डिजिटलीकरण के कारण संचार और सूचना के माध्यमों में व्यापक परिवर्तन आया है. अंग्रेज़ी भाषा के वर्चस्व के बावजूद, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का डिजिटल माध्यमों में प्रभाव बढ़ता जा रहा है. डिजिटलीकरण ने हिंदी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, जिससे यह न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है.

डिजिटलीकरण का तात्पर्य सभी सेवाओं और कार्यों को तकनीकी रूप से सुलभ और सहज बनाना है. इसमें इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन, सरकारी पोर्टल, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा और सोशल मीडिया का प्रमुख योगदान है. पहले जहाँ सरकारी और व्यवसायिक कार्यों में अंग्रेज़ी का प्रभुत्व था, वहीं अब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ भी डिजिटल माध्यमों में अपनी जगह बना रही हैं.

भारत सरकार ने 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम के तहत विभिन्न सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराया है. सरकारी वेबसाइट्स, मोबाइल ऐप्स और पोर्टल हिंदी में भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे आम नागरिकों को अपनी भाषा में सरकारी योजनाओं और सेवाओं की जानकारी आसानी से मिल रही है.

डिजिटलीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं. कई ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म जैसे 'स्वयं', 'दीक्षा', 'अनअकेडमी', और 'यूट्यूब' पर हिंदी में पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जा रहे हैं. इससे हिंदी भाषी छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा अपनी भाषा में प्राप्त हो रही है.

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर हिंदी भाषा का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है. लोग अपनी मातृभाषा में संवाद करना पसंद कर रहे हैं, जिससे हिंदी में डिजिटल सामग्री की मात्रा और प्रभाव बढ़ा है.

डिजिटलीकरण ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को भी नया जीवन दिया है. कई ऑनलाइन पत्रिकाएँ, न्यूज़ पोर्टल और ब्लॉग हिंदी में उपलब्ध हैं, जिससे हिंदी पाठकों को उनकी भाषा में उच्च गुणवत्ता की सामग्री पढ़ने को मिल रही है.

ई-कॉमर्स और डिजिटल व्यापार में हिंदी की भूमिका बढ़ रही है. अमेज़न, फ्लिपकार्ट, और गूगल जैसी कंपनियाँ हिंदी में सेवाएँ उपलब्ध करा रही हैं. इससे वे अधिक भारतीय उपभोक्ताओं तक पहुँच बना रही हैं और हिंदी को व्यापारिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बना रही हैं.

आजकल कई कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित उपकरण और एप्लिकेशन हिंदी में उपलब्ध हैं. गूगल असिस्टेंट, एलेक्सा, और सीरी जैसे वर्चुअल असिस्टेंट अब हिंदी समझ सकते हैं और हिंदी में उत्तर भी दे सकते हैं. यह तकनीकी प्रगति हिंदी को डिजिटल जगत में और अधिक सशक्त बना रही है.

हालाँकि हिंदी का डिजिटल उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

कई तकनीकी शब्दों के लिए हिंदी में सटीक अनुवाद सहज उपलब्ध नहीं हैं, जिससे लोग अंग्रेज़ी का सहारा लेने लगते हैं.

हिंदी टाइपिंग अभी भी कई लोगों को कठिन लगाती है, जिससे डिजिटल माध्यमों में हिंदी लेखन की गति धीमी हो सकती है.

वैश्विक स्तर पर अंग्रेज़ी का वर्चस्व बना हुआ है, जिससे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में कुछ बाधाएँ उत्पन्न हो रही हैं.

हिंदी के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुवाद उपकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का अभी भी पूर्ण रूप से विकास नहीं हुआ है.

हिंदी भाषा के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुवाद उपकरण और वॉयस रिकग्निशन सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता है.हिंदी टाइपिंग के आसान कीबोर्ड और सॉफ्टवेयर विकसित किए जाने चाहिए ताकि लोग आसानी से हिंदी में टाइप कर सकें.

सरकारी और निजी संगठनों को हिंदी में अधिक से अधिक डिजिटल सामग्री तैयार करनी चाहिए ताकि हिंदी उपयोगकर्ताओं को उनकी भाषा में गुणवत्तापूर्ण जानकारी मिल सके.

स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी माध्यम में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए ताकि छात्रों को तकनीकी विषय भी हिंदी में पढ़ने को मिलें.

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और हिंदी में डिजिटल मार्केटिंग को बढ़ावा देना चाहिए.

डिजिटलीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा की सार्थकता और प्रासंगिकता लगातार बढ़ रही है. सरकार और निजी क्षेत्र हिंदी को तकनीकी माध्यमों में अधिक सुलभ बना रहे हैं. यदि हम हिंदी भाषा के तकनीकी विकास पर ध्यान दें और इसे और अधिक सरल व प्रभावी बनाएँ, तो यह न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना सकती है. डिजिटलीकरण और हिंदी का मेल भारतीय समाज को अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा. हिंदी भाषा की डिजिटल उपस्थिति को और अधिक सशक्त बनाकर हम इसे भविष्य की भाषा के रूप में विकसित कर सकते हैं.

प्रीति मिश्रा
परिवीक्षाधीन अधिकारी, गोरखपुर

एमएसएमई – भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका

भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम का महत्वपूर्ण स्थान है. ये छोटे व्यवसाय न केवल रोजगार के अवसर पैदा करते हैं बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में भी प्रमुख योगदान देते हैं. भारत की पंचानबे प्रतिशत से अधिक कंपनियां एमएसएमई के अंतर्गत आती हैं और ये चालीस प्रतिशत निर्यात का हिस्सा बनाती हैं.

एमएसएमई वो उद्योग होते हैं जो विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में शामिल होते हैं और अपनी कार्यक्षमता के आधार पर सूक्ष्म, लघु या मध्यम आकार के होते हैं. भारत सरकार ने एमएसएमई को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है -

सूक्ष्म उद्यम

ऐसे उद्योग जिनमें निवेश की सीमा रू. एक करोड़ से कम होती है और वार्षिक कारोबार रू. पांच करोड़ तक होता है.

लघु उद्यम

ऐसे उद्योग जिनमें निवेश रू. दस करोड़ तक हो और वार्षिक कारोबार रू. पचास करोड़ तक हो.

मध्यम उद्यम

ऐसे उद्योग जिनमें निवेश रू. पचास करोड़ तक हो और वार्षिक कारोबार रू. दौ सौ पचास करोड़ तक हो.

एमएसएमई के लाभ

रोजगार सृजन

एमएसएमई भारत में रोजगार के सबसे विशाल स्त्रोतों में से एक है. ये लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं. विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में यह न केवल श्रमिकों को कार्य प्रदान करता है बल्कि स्वरोजगार को भी बढ़ावा देता है.

आर्थिक विकास में योगदान

ये छोटे व्यवसाय उत्पादों और सेवाओं का निर्माण करते हैं, जिससे जीडीपी में वृद्धि होती है. इसके अलावा, ये निर्यात को बढ़ावा देते हैं और विदेशी मुद्रा अर्जन में मदद करते हैं.

नवाचार और विविधता

एमएसएमई के पास सीमित संसाधन होते हुए भी वे नवाचार, नए उत्पाद और तकनीकी समाधान लाते हैं. यह प्रतिस्पर्धात्मकता और विभिन्न उत्पादों की विविधता को बढ़ावा देता है.

स्थानीय विकास

एमएसएमई स्थानीय क्षेत्रों में स्थापित होते हैं, जिससे उन क्षेत्रों का समग्र विकास होता है. ये छोटे उद्योग ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में अधिक रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं.

एमएसएमई के सामने चुनौतियां

वित्तीय समस्याएं

एमएसएमई के लिए पूंजी जुटाना प्रमुख समस्या होती हैं. बैंकों और वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करना इन उद्यमों के लिए कठिन हो सकता है क्योंकि उनकी ऋण चुकाने की क्षमता और क्रेडिट इतिहास पर सवाल उठते हैं.

तकनीकी समस्या

अधिकांश एमएसएमई तकनीकी रूप से पिछड़े होते हैं. इन्हें नए उपकरणों और उन्नत तकनीकों के इस्तेमाल के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं मिलते हैं, जिससे वे प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकते हैं.

प्रशासनिक जटिलताएं

सरकारी नियमों और प्रक्रियाओं की जटिलता, लाइसेंस और परमिट की आवश्यकता, कर नीति आदि के कारण एमएसएमई को कई प्रशासनिक समस्याओं का सामना करना होता है.

मार्केटिंग और ब्रांडिंग

एमएसएमई के पास विशाल विपणन बजट और विज्ञापन की सुविधा नहीं होती जिससे वे अपने उत्पादों को उचित तरीके से प्रचारित और विपणन नहीं कर पाते. वे विशाल व्यवसायों के मुकाबले अपने ब्रांड को स्थापित करने में असमर्थ हो सकते हैं.

एमएसएमई के विकास के अवसर

सरकारी योजनाएं

भारत सरकार ने एमएसएमई के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, उधारी योजनाएं और एमएसएमई क्लस्टर डेवलपेंट प्रोग्राम. इन योजनाओं के तहत वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण की सुविधा दी जाती है.

नई तकनीकी नवाचार

डिजिटलीकरण और तकनीकी नवाचार ने एमएसएमई के लिए नए अवसर खोले हैं. छोटे व्यवसाय अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं और वैश्विक बाजार में अपनी उपस्थिति स्थापित कर सकते हैं.

वैश्विक बाजार

एमएसएमई अपने उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात कर सकते हैं. मेक इन इंडिया जैसे अभियानों ने छोटे उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अपनी पहचान बनाने का अवसर प्रदान किया है.

पारंपरिक से आधुनिकता की ओर

कई एमएसएमई पारंपरिक व्यवसायों को आधुनिक दृष्टिकोण से जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं जैसे कि कृषि आधारित व्यवसायों में तकनीकी सहायता का इस्तेमाल या पारंपरिक हस्तशिल्प को वैश्विक उपभोक्ताओं तक पहुंचाना. एमएसएमई भारत के आर्थिक तंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं और इनका विकास देश की समृद्धि और सशक्तीकरण के लिए आवश्यक है. सरकार द्वारा तैयार की गई विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम छोटे और मध्यम उद्योगों को नए अवसर प्रदान कर रहे हैं. हालांकि इन्हें वित्तीय, प्रशासनिक और तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, फिर भी इन व्यवसायों में विकास की अपार संभावनाएं हैं. अगर इन समस्याओं को सही दिशा में हल किया जाए तो एमएसएमई न केवल भारत बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं.

सुझाव

एमएसएमई के लिए वित्तीय सहायता और ऋण व्यवस्था को आसान और सुलभ बनाना

तकनीकी प्रशिक्षण और डिजिटल प्लेटफॉर्मों का उपयोग बढ़ाना.

बेहतर विपणन रणनीतियों और ब्रांडिंग के लिए समर्थन प्रदान करना.

सरकारी नीतियों और योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना.

इस तरह से एमएसएमई को सशक्त बनाकर हम देश को आर्थिक दृष्टि से प्रगति की दिशा में आगे ले जा सकते हैं.

सुमेन्द्र कुमार
उप क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

??????
हिंदी ?
languages
English
barrier

अपने ही देश में अंग्रेजियत से जूझती हिंदी

हिंदी भारत की आत्मा है, इसकी मिट्टी की खुशबू में रची-बसी एक ऐसी भाषा जो देश की संस्कृति, भावनाओं और परंपराओं को जीवंत करती है. लेकिन विडंबना यह है कि जिस देश में हिंदी करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, वहीं आज यह अंग्रेजी के दबाव में दम तोड़ती नजर आती है. ''अपने ही घर में बेगानी'' सी हो गई हिंदी, अंग्रेजियत की चमक-दमक के आगे संघर्षरत है. आज स्थिति यह है कि हिंदी बोलने या लिखने वालों को ''अल्पज्ञ'', ''कमज़ोर'' या ''पिछड़ा'' माना जाने लगा है, जबकि अंग्रेजी को आधुनिकता, विद्वता और सफलता का प्रतीक समझा जाने लगा है. यह मानसिकता न केवल हिंदी भाषा के लिए, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता के लिए भी एक खतरा बन चुकी है.

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी बनाम अंग्रेजी

भारत में अंग्रेजी भाषा का आगमन ब्रिटिश उपनिवेशवाद के साथ हुआ. अंग्रेजों ने प्रशासनिक, शैक्षणिक और न्यायिक क्षेत्रों में अंग्रेजी को इतनी गहराई से स्थापित किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी यह हट नहीं सकी.

1. अंग्रेजी का औपनिवेशिक प्रभाव

अंग्रेजी को एक ''श्रेष्ठ भाषा'' के रूप में प्रचारित किया गया. अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों को ''सभ्य'', ''बौद्धिक'' और ''प्रशासन योग्य'' समझा गया. इसने धीरे-धीरे एक मानसिक गुलामी को जन्म दिया, जिसे स्वतंत्रता के बाद भी समाप्त नहीं किया जा सका.

2. स्वतंत्रता के बाद हिंदी की स्थिति

स्वतंत्र भारत में जब संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया, तो यह अपेक्षा की गई थी कि धीरे-धीरे हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले लेगी. लेकिन यह सपना आज भी अधूरा है. अंग्रेजी को "सहायक भाषा" के रूप में जोड़ा गया था, परंतु व्यवहार में वह प्रधान बन गई और हिंदी पीछे छूटती गई.

वर्तमान समय में हिंदी की स्थिति

1. शिक्षा में हिंदी का ह्रास

देश के अधिकांश उच्च शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी ही माध्यम बनी हुई है. यहाँ तक कि हिंदी भाषी राज्यों में भी विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी को वरीयता दी जाती है. मेडिकल, इंजीनियरिंग, लॉ, और बिजनेस जैसे विषयों में हिंदी माध्यम को या तो समाप्त कर दिया गया है या उसका स्तर इतना गिरा दिया गया है कि छात्र उसे अपनाने से कतराते हैं.

2. प्रशासन और न्याय प्रणाली में अंग्रेजी का वर्चस्व

सरकारी दफ्तरों और न्यायालयों में अब भी अंग्रेजी हावी है. आम जनता, जो हिंदी बोलती है, न्याय या सेवाओं के लिए खुद को असहाय महसूस करती है.

3. निजी क्षेत्र और नौकरी बाजार में अंग्रेजी का बोलबाला

कॉर्पोरेट जगत में नौकरी पाने के लिए अंग्रेजी अनिवार्य बन चुकी है. इंटरव्यू, रिपोर्ट, ईमेल, मीटिंग - सब कुछ अंग्रेजी में होता है. हिंदी भाषी युवा यदि अंग्रेजी में दक्ष न हों तो उसके लिए अवसर सीमित हो जाते हैं, चाहे उसके पास ज्ञान और कौशल की कोई कमी न हो.

4. मीडिया और मनोरंजन में अंग्रेजी मिश्रण

टीवी चैनलों, फिल्मों और रेडियो कार्यक्रमों में हिंदी के नाम पर जो बोली जाती है, वह ''हिंग्लिश'' है - एक ऐसी मिलीजुली भाषा जिसमें अंग्रेजी के शब्दों का बोलबाला रहता है. इसका असर आम बोलचाल पर भी पड़ा है और नई पीढ़ी ''शुद्ध हिंदी'' से दूर होती जा रही है.

हिंदी बनाम अंग्रेजी - यह संघर्ष क्यों?

1. मानसिक गुलामी

अंग्रेजी को ज्ञान, आधुनिकता, प्रतिष्ठा और सफलता का पर्याय मानने की मानसिकता आज भी समाज में गहराई से पैठी हुई है. अंग्रेजी बोलने वाला व्यक्ति ''अधिक शिक्षित'' माना जाता है, जबकि हिंदी भाषी को कमतर आँका जाता है.

2. नीति और राजनीति में असमंजस

यद्यपि सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार की बात करती है, लेकिन नीतियों में विरोधाभास है. संसद की कार्यवाही, सरकारी वेबसाइट्स, सरकारी नौकरियों के प्रवेश-परीक्षा आदि में अंग्रेजी का दबदबा है.

3. शिक्षा प्रणाली की विसंगतियाँ

हिंदी माध्यम के विद्यालयों को कमतर समझा जाता है. उच्च शिक्षा के संस्थानों में अंग्रेजी माध्यम को वरीयता दी जाती है, जिससे हिंदी भाषी छात्रों को आत्मविश्वास की कमी होती है.

4. सामाजिक विभाजन का कारण

भाषा के आधार पर समाज में दो वर्ग बन गए हैं - अंग्रेजी जानने वाले "अभिजात्य वर्ग", और हिंदी जानने वाले "साधारण वर्ग".

यह विभाजन केवल भाषाई नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक असमानता को भी बढ़ावा देता है.

हिंदी की उपेक्षा के दुष्परिणाम

1. भाषाई असंतुलन

जब राष्ट्र की बहुसंख्यक जनता की भाषा को उपेक्षित किया जाता है, तो एक असंतुलन पैदा होता है. यह असंतुलन लोकतंत्र के सिद्धांतों के खिलाफ है.

2. सांस्कृतिक संकट

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है. यदि हिंदी को दबाया गया, तो भारतीय संस्कृति की जड़ें कमजोर होंगी. हमारे साहित्य, दर्शन, इतिहास और परंपराएँ भी खतरे में पड़ेंगी.

3. आत्मगौरव की कमी

हिंदी भाषी व्यक्ति जब अपनी भाषा के कारण हीन महसूस करता है, तो उसके आत्मगौरव को ठेस पहुँचती है. यह मानसिक रूप से भी घातक है.

हिंदी के पक्ष में तर्क

1. हिंदी भारत की संपर्क भाषा है

हिंदी को समझने और बोलने वाले भारत में सबसे अधिक हैं. यह उत्तर भारत में लगभग हर राज्य की प्रमुख भाषा है और दक्षिण भारत में भी व्यापक रूप से समझी जाती है.

2. वैज्ञानिक भाषा के रूप में हिंदी

यह धारणा कि हिंदी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा नहीं बन सकती, पूर्णत: गलत है. हिंदी में तकनीकी, चिकित्सा, विज्ञान, गणित आदि विषयों पर अब उत्कृष्ट सामग्री उपलब्ध है.

3. रोजगार और प्रशासन में हिंदी की उपयोगिता

यदि रोजगार और प्रशासन में हिंदी को प्राथमिकता दी जाए, तो देश की बड़ी जनसंख्या को अवसर मिल सकता है. इससे क्षेत्रीय असंतुलन भी घटेगा.

हिंदी के उत्थान के लिए समाधान

1. शिक्षा प्रणाली में हिंदी को सम्मान देना

स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी को वैकल्पिक नहीं, बल्कि सशक्त माध्यम बनाना होगा. विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और व्यवसाय जैसे विषयों में उच्च गुणवत्ता की हिंदी सामग्री तैयार करनी चाहिए.

2. सरकारी और न्यायिक प्रक्रियाओं में हिंदी का प्रयोग

न्यायालयों और सरकारी दफ्तरों में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य किया जाना चाहिए. यह न केवल लोगों को सुविधा देगा, बल्कि हिंदी की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी.

3. मीडिया और फिल्मों में हिंदी की शुद्धता पर बल

मनोरंजन और मीडिया उद्योग में हिंदी का प्रयोग शुद्ध और सरल रूप में किया जाए. हिंग्लिश के अत्यधिक प्रयोग पर नियंत्रण रखा जाना चाहिए.

4. हिंदी भाषी युवाओं में आत्मविश्वास बढ़ाना

युवाओं को यह समझाया जाना चाहिए कि भाषा किसी व्यक्ति की योग्यता की कसौटी नहीं होती. हिंदी में सोचने, लिखने और बोलने वाले लोग भी अत्यंत सक्षम और सफल हो सकते हैं.

5. तकनीकी क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देना

डिजिटल प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप्स, वेबसाइट्स, और सोशल मीडिया पर हिंदी का व्यापक प्रयोग किया जाए. यह न केवल हिंदी की पहुँच को बढ़ाएगा, बल्कि इसे विश्व स्तर पर भी सशक्त करेगा.

कुछ सफल उदाहरण

- हिंदी साहित्य का वैश्विक प्रसार: प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन, निर्मल वर्मा, और अन्य हिंदी साहित्यकारों की कृतियाँ अनुवादित होकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा पा चुकी हैं.
- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की पकड़: यूट्यूब, इंस्टाग्राम, और ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म्स पर आज हिंदी कंटेंट की मांग तेजी से बढ़ रही है.
- सरकारी योजनाओं में हिंदी का उपयोग: डिजिटल इंडिया, आयुष्मान भारत, और स्वच्छ भारत जैसी योजनाओं में हिंदी का प्रयोग जनता को जोड़ने में सहायक रहा है.

निष्कर्ष

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, यह भारत की आत्मा है. यह वह माध्यम है जो आम आदमी से लेकर राष्ट्र की भावनाओं को एक सूत्र में पिरोती है. लेकिन दुख की बात यह है कि आज यह अपनी ही धरती पर अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है, अंग्रेजियत की चमक के आगे उपेक्षित हो रही है. यह एक सामाजिक और मानसिक संकट है, जिसे केवल नीतियों से नहीं, जनमानस की चेतना से ही दूर किया जा सकता है.

यदि हमें एक आत्मनिर्भर, आत्मगौरव से भरपूर भारत का निर्माण करना है, तो हमें हिंदी को उसका उचित स्थान देना ही होगा - न केवल सरकारी कामकाज में, बल्कि समाज की सोच में भी. भाषा का सम्मान केवल उसका प्रयोग करके ही किया जा सकता है. इसलिए समय आ गया है कि हम अंग्रेजी के मोहजाल से बाहर निकलें और अपनी हिंदी पर गर्व करें. हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को भी इसी दिशा में उन्मुख करना चाहिए ताकि एक सशक्त देश के निर्माण की अवधारणा को चरितार्थ किया जा सके हमें आत्मगौरव और स्वाभिमान के लिए किसी अन्य देश की भाषा की आवश्यकता है ही क्यों ?

राजीव रंजन सिन्हा
अंचल प्रमुख, पटना
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

कृत्रिम का अर्थ है मानव द्वारा बनाया गया अर्थात जो प्राकृतिक न हो. यह शब्द उन वस्तुओं, प्रक्रियाओं या विचारों को संदर्भित करता है जो प्रकृति में मौजूद न हों, बल्कि मनुष्यों द्वारा उनके निर्माण या अनुकरण के माध्यम से बनाई गई हों. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जिसका उद्देश्य स्मार्ट व्यवहार करने में सक्षम मशीनें बनाना है. इसमें मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और रोबोटिक्स जैसी विभिन्न तकनीकें शामिल हैं. कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानव बुद्धि की नकल करने, डेटा से सीखने और जटिल कार्यों को स्वचालित करने की क्षमता है, जिससे बैंकिंग सहित विभिन्न उद्योगों में क्रांति आ सकती है.

इस लेख का उद्देश्य बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वर्तमान स्थिति का व्यापक अवलोकन, पारंपरिक बैंकों में विरासत प्रणालियों के साथ इसके एकीकरण की आवश्यकता, तथा भविष्य की झलक प्रदान करना है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, बैंकिंग एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचती जा रही है. तकनीकी प्रगति और बदलती उपभोक्ता अपेक्षाओं के कारण यह क्षेत्र एक परिवर्तनकारी बदलाव से गुजर रहा है. इस परिवर्तन के केन्द्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता है, यह एक ऐसी तकनीक है जो बैंकिंग परिचालन और ग्राहक इंटरेक्शन के मूल ढांचे को फिर से परिभाषित करने का वादा करती है.

बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाना कोई भविष्य की अवधारणा नहीं बल्कि वर्तमान समय की मांग है. एक रिपोर्ट के अनुसार, आज बैंकों ने ग्राहक सेवा और धोखाधड़ी का पता लगाने से लेकर जोखिम प्रबंधन और पूर्वानुमान विश्लेषण तक कई अनुप्रयोगों के लिए पहले ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाना प्रारंभ कर लिया है अथवा इस दिशा में प्रयास कर रहे हैं. यह तकनीक बैंकिंग पारिस्थितिकी तंत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है.

बैंकों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों में निवेश में भी वृद्धि देखी जा रही है. पारंपरिक बैंकिंग और पुरानी प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एकीकरण की आवश्यकता महसूस की जा रही है. जबकि कृत्रिम बुधिमत्ता को अपनाने में तेजी आ रही है, यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि बैंकिंग उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अभी भी पुरानी प्रणालियों पर काम करता है. यहाँ पुराने सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर इंफ्रास्ट्रक्चर हैं जो दशकों पहले बनाए गए थे और आधुनिक बैंकिंग की जटिलताओं और मांगों को संभालने के लिए आज सुसज्जित नहीं माने जा रहे हैं. इसलिए, चुनौती मौजूदा संचालन को बाधित किए बिना इन पुरानी प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों को एकीकृत करने में है.

इस एकीकरण की आवश्यकता सिर्फ़ प्रतिस्पर्धी दबावों से ही नहीं बल्कि विकसित होते विनियामक ढाँचों से भी प्रेरित है. जैसे-जैसे हम डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, विनियामक निकाय डेटा प्रबंधन और ग्राहक गोपनीयता पर शिकंजा कस रहे हैं. कृत्रिम बुद्धिमत्ता बैंकों को इन विनियामक भूलभुलैया से बाहर निकलने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जो न सिर्फ़ कुशल हैं बल्कि कानूनी आवश्यकताओं के अनुरूप भी हैं.

कोविड-19 महामारी ने डिजिटल परिवर्तन की आवश्यकता को बढ़ा दिया है. ग्राहकों के व्यवहार में भी बदलाव आया है और दूरस्थ और व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाओं की मांग बढ़ रही है. अनुकूलित समाधान प्रदान करके इस अंतर को पूरा किया जा सकता है, जिससे परिचालन क्षमता और ग्राहक अनुभव दोनों में सुधार होता है.

पारंपरिक बैंकिंग प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण सिर्फ़ एक तकनीकी उन्नयन नहीं है; यह एक रणनीतिक अनिवार्यता है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, जो बैंक अपने ऑपरेशन में कृत्रिम बुधिमत्ता को सफलतापूर्वक एकीकृत करेंगे, वे न सिर्फ़ भीड़ में आगे रहेंगे; बल्कि इसे पुन: परिभाषित करेंगे. मेरा व्यक्तिगत मानना है कि बैंकिंग उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाना एक बहुआयामी दृष्टिकोण है जो बैंकिंग परिचालन के विभिन्न पहलुओं को छूता है.

ग्राहक सेवा: कृत्रिम बुद्धिमत्ता - संचालित चैटबॉट, बैंकों के अपने ग्राहकों के साथ बातचीत करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं. ये चैटबॉट लेन-देन संबंधी प्रश्नों के उत्तर देने से लेकर वित्तीय सलाह देने तक कई तरह के काम संभाल सकते हैं.

धोखाधड़ी का पता लगाना: वास्तविक समय में लेन-देन के पैटर्न की निगरानी करने, संदिग्ध गतिविधियों को चिन्हित करने और धोखाधड़ी के जोखिम को कम करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम का उपयोग तेजी से किया जा रहा है.

जोखिम प्रबंधन: जोखिमों का आकलन और प्रबंधन करने में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. एल्गोरिदम बाजार के रुझानों की भविष्यवाणी करने के लिए विशाल मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे निवेश संबंधी निर्णय लेने में सहायता मिलती है.

पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण: बैंक ग्राहक व्यवहार का विश्लेषण करने और व्यक्तिगत वित्तीय उत्पाद प्रदान करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ उठा रहे हैं. इससे न केवल ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है बल्कि बैंक के लिए क्रॉस-सेलिंग के अवसर भी बढ़ते हैं. जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकें विकसित होती रहेंगी, बैंकिंग उद्योग पर उनका दायरा और प्रभाव तेज़ी से बढ़ने की उम्मीद है.

आजकल यह देखा जा रहा है कि बैंकों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में निवेश के रुझान बढ़ रहे हैं. कई वेंचर कैपिटल फर्म वित्तीय सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्टार्टअप में गहरी दिलचस्पी दिखा रही हैं. पूंजी का यह प्रवाह इन स्टार्टअप को ऐसे अभिनव समाधान विकसित करने में सक्षम बना रहा है जिन्हें आसानी से बैंकिंग पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत किया जा सकता है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (फ्री-एआई) के जिम्मेदार और नैतिक सक्षमता हेतु रूपरेखा विकसित करने के लिए आठ सदस्यीय समिति के गठन की घोषणा की है. आईआईटी बॉम्बे के प्रोफेसर पुष्पक भट्टाचार्य (कम्प्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग) की अध्यक्षता में, पैनल वैश्विक स्तर पर और साथ ही भारत में वित्तीय सेवाओं में एआई को अपनाने के वर्तमान स्तर का आकलन करेगा. यह वैश्विक स्तर पर वित्तीय क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर विनियामक और पर्यवेक्षी दृष्टिकोण की भी समीक्षा करेगा. पैनल एआई से जुड़े संभावित जोखिमों (यदि कोई हों) की भी पहचान करेगा और बैंकों, एनबीएफसी, फिनटेक, पीएसओ आदि सहित वित्तीय संस्थानों के लिए मूल्यांकन, शमन और निगरानी ढांचे और परिणामी अनुपालन आवश्यकताओं की सिफारिश करेगा.

बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता परिदृश्य गतिशील और आशाजनक दोनों है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण तकनीकी प्रगति और रणनीतिक निवेश दोनों से प्रेरित होकर तेजी से आगे बढ़ने वाला है. ऐसा लगता है कि भविष्य केवल स्वचालित नहीं है; यह बुद्धिमत्तापूर्ण भी है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य तभी उज्ज्वल है जब मनुष्य यह जान ले कि इसका उपयोग समाज के लाभ के लिए कैसे किया जाए. जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में दुनिया को बेहतर बनाने की शक्ति है, लेकिन इसके साथ कुछ नैतिक चिंताएं भी हैं.

देवेन्द्र कुमार सिंह
उप क्षेत्र प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

एस.एम.ए

ऋण दिया है ऋणधारी को,
तो रखो उस पर निगरानी.
समय पर यदि वापस न हो,
तो एस.एम.ए. की है निशानी.

एस.एम.ए. एक कर्कशा रोग है,
चरण है, इसके तीन महान.
यदि भूल-चूक हो जाए देने में,
ये प्रथम चरण की है पहचान !

करो कसरत ऋणी को समझाओ,
ब्याज सहित किस्त वापस लाओ.
भविष्य के प्रति सजग कराओ,
आस्तियों को सबल बनाओ.

फिर भी यदि ऋणी न माने तो,
समझो द्वितीय चरण का प्रमाण.
सुबह शाम संपर्क साधना.
नोटिस के माध्यम से हो विवेचना.

तीसरा चरण बहुत कठिन है,
पीछे खाई और आगे पर्वत है.
तीन किस्तों का बोझ पड़ा है,
चूक जाए तो मौत खड़ा है.

पी.डी.सी. का लो संज्ञान,
लीगल नोटिस को भेजो तान.
अहर्निश अब करो अनुसंधान,
त्वरित इसका हो निदान.

गिरने से पहले उठ खड़े रहो,
सजग प्रहरी सब बने रहो.
एस.एम.ए. के मोर्चे पर डटे रहो,
उत्तम आस्ति के साथ आगे रहो.

महेश नारायण राय
मुख्य प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

15वाँ अखिल भारतीय राजभाषा
15th ALL INDIA OFFICIAL LANGUAGE C
श्री राजीव वार्ष्णेय
श्री के. शशिधर

15വാമത് അഖിലേന്ത്യാ ഔദ്യോഗിക ഭാഷാ

15വാമത് അഖിലേന്ത്യാ ഔദ്യോഗിക ഭാഷാ സമ്മേ
15वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
15th ALL INDIA OFFICIAL LANGUAGE CON
Date : 6-7 MARC
VENUE:THIRUVANANTH
श्री राजीव वार्ष्णेय
डॉ.सुमा एस

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

अन्तर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन: दिनांक 12.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, डॉ. विचित्र सेन गुप्त, उप निदेशक, गृह मंत्रालय; विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता, प्रो. प्रसून दत्त सिंह, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी; श्री शैलेन्द्र प्रसाद, उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ इंडिया; श्री राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, श्री कुमार विवेक, क्षेत्रीय प्रमुख, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, डॉ. ज्ञान प्रकाश, अतिथि प्रोफ़ेसर, हंकुक विश्विद्यालय, दक्षिण कोरिया; डॉ. श्वेता सहायक आचार्य, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी उपस्थित थे. साथ ही, मुजफ्फरपुर के सभी कार्यालयों के स्टाफ सदस्य एवं ऑनलाइन माध्यम से देश के सभी भागों से राजभाषा अधिकारी एवं स्टाफ सदस्य जुड़े थे तथा विदेशों से, कनाडा, यूएई, नेपाल, दक्षिण कोरिया, जापान इत्यादि देशों से भी लोग जुड़े थे.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
PPF

लोक भविष्य निधि खाते (पब्लिक प्रोविडेंट फण्ड खाते)

हम सभी सामान्य तौर पर पीपीएफ खातों से परिचित हैं. 100% कर-मुक्त ब्याज, आयकर अधिनियम की धारा 80सी (पुरानी व्यवस्था के तहत) के तहत कर छूट के अलावा, पीपीएफ खातों को खाताधारक के किसी भी ऋण या दायित्व के निपटान के लिए न्यायालय के आदेश या डिक्री द्वारा एटेच नहीं किया जा सकता है. इस प्रकार, पीपीएफ खाता बनाए रखने के कई फायदे हैं.

इस लेख के माध्यम से मैं पीपीएफ खातों के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहूंगा जिन पर ज्यादातर वरिष्ठ नागरिकों, जिनमें सेवानिवृत्त बैंकर भी शामिल हैं, द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है.

कई वरिष्ठ नागरिक ऐसे हैं जिनके पास अपनी सक्रिय सेवा के दौरान पीपीएफ खाते थे, लेकिन उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति के बाद या ऐसे खातों की परिपक्वता/विस्तारित परिपक्वता पर पीपीएफ खाता बंद कर दिया है. इनमें से अधिकांश वरिष्ठ नागरिकों के पास नियमित पेंशन आय या अन्य आय हो सकती है और उनकी कुल आय करपात्र (taxable) हो सकती है. ऐसे अधिकांश लोगों का मानना है कि उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद अथवा इसकी परिपक्वता के बाद पीपीएफ खाता बनाए रखने की आवश्यकता नहीं है. दूसरे शब्दों में, उनका एक सवाल है कि 60, 70 या 80 वर्ष की आयु के व्यक्ति को पीपीएफ खाता क्यों खोलना या बनाए रखना चाहिए. मेरी राय में यह एक बड़ी गलत धारणा है.

पीपीएफ खातों के कुछ महत्वपूर्ण पहलू:

1) एक वरिष्ठ नागरिक, अपनी आयु के बावजूद (irrespective of age), एक पीपीएफ खाता अवश्य खोले (यदि पहले से नहीं है). सबसे आम गलत धारणाओं में से एक पीपीएफ खाते की अवधि के बारे में है. लोगों को लगता है कि 15 साल की अवधि बहुत लंबी है. लेकिन, खाताधारक की मृत्यु के बाद नामांकित व्यक्ति (Nominee) पूरे पीपीएफ बैलेंस को निकाल सकता है, भले ही खाता कितने भी समय से चल रहा हो. इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति प्रत्येक वित्तीय वर्ष में अपने पीपीएफ खाते में अधिकतम ₹1.50 लाख जमा कर सकता है और धारा 80सी के तहत कर छूट का लाभ उठा सकता है और 7.1% प्रति वर्ष (वर्तमान में) कर-मुक्त ब्याज अर्जित कर सकता है. खाताधारक की मृत्यु की स्थिति में, नामांकित व्यक्ति परिपक्वता या पीपीएफ खाते की विस्तारित परिपक्वता से पहले भी किसी भी समय पूरी राशि निकालने के लिए स्वतंत्र है. इस प्रकार, वृद्धावस्था में भी पीपीएफ खाता न बनाए रखने या न खोलने का कोई कारण नहीं है.

2) वर्तमान में, एक व्यक्तिगत करदाता के लिए दो प्रकार की कर प्रणालियाँ हैं, अर्थात्, पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था. नई व्यवस्था का विकल्प चुनने वाले करदाता को धारा 80सी के तहत कोई कर छूट उपलब्ध नहीं है. इसलिए, हम में से कई लोग तर्क देंगे कि जब कर की नई व्यवस्था के तहत कोई छूट उपलब्ध नहीं है तो पीपीएफ में निवेश क्यों करना चाहिए. यदि किसी के पास पर्याप्त आय है, तो यह स्पष्ट है कि उसके पास निवेश करने के लिए अधिशेष धन होगा ही होगा. पीपीएफ खाता प्रति वर्ष 7.1% कर-मुक्त रिटर्न प्रदान करता है, जो कोई अन्य निवेश नहीं देता है. इसके अलावा, अपने नाम पर कर-मुक्त आय अर्जित करना बहुत महत्वपूर्ण है जब आपकी आय करपात्र हो.

   इस प्रकार, करदाता के लिए नियमित रूप से पीपीएफ में निवेश करना निश्चित रूप से लाभप्रद है, भले ही उसने नई आयकर व्यवस्था का विकल्प चुना हो !!!

3) पीपीएफ खाते की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि आप अपने खाते में अधिकतम 4 व्यक्तियों को उत्तराधिकारी (Nominee) के रूप में पंजीकृत कर सकते हैं. यदि आपने पीपीएफ खाते में केवल एक व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाया है, तो कृपया शीघ्रतम कुल 4 व्यक्तियों को उत्तराधिकारी के रूप में पंजीकृत करें. पीपीएफ में एक से अधिक व्यक्तियों को नामांकित करने के पीछे का तर्क समझना बहुत आवश्यक है.

   कभी-कभी खाताधारक की मृत्यु के बाद, एकमात्र नामांकित व्यक्ति की भी बैंक या डाकघर में अपना दावा प्रस्तुत करने

से पहले मृत्यु हो जाती है. ऐसे मामलों में, मृतक पीपीएफ खाताधारक के कानूनी उत्तराधिकारियों को अपने दावे के निपटान के लिए जटिल कानूनी औपचारिकताओं से गुजरना पड़ता है. यदि खाते में शेष राशि ₹5 लाख से अधिक है, तो कानूनी उत्तराधिकारियों को उत्तराधिकार प्रमाणपत्र (Succession Certificate) प्राप्त करना आवश्यक है, जिसमें समय लगता है और यह महंगा भी होता है. यदि खाते में एक से अधिक नामांकित व्यक्ति हैं और यदि किसी नामांकित व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है (खाताधारक की मृत्यु के बाद लेकिन राशि का दावा किए जाने से पहले), तो मृतक नामांकित व्यक्ति का पात्र शेष राशि में हिस्सा जीवित नामांकित व्यक्तियों के बीच उनके निर्दिष्ट शेयरों के समान अनुपात में वितरित किया जाता है. उदाहरणार्थ, यदि खाताधारक ने तीन उत्तराधिकारियों (जिनके नाम महेश, रमेश और सुरेश है) को पंजीकृत किये है और प्रत्येक का शेयर 33.33 प्रतिशत निर्धारित किया है तो खाताधारक और महेश दोनों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में रमेश और सुरेश को पीपीएफ खाते में शेष राशि का 50-50 प्रतिशत हिस्सा आबंटित किया जाएगा.

इसलिए, पीपीएफ खाते में एक से अधिक व्यक्ति (अधिकतम 4) को नामांकित करना हमेशा वैकल्पिक है.

4) आयकर अधिनियम के अनुसार, यदि आप उपहार (Gift) के रूप में अपनी पत्नी/पति के नाम पर निवेश करते हैं, तो क्लबिंग प्रावधान लागू होंगे और उपहारित राशि पर अर्जित करपात्र ब्याज आपकी आय के साथ जोड़ा जाएगा (यह मानते हुए कि दाता प्राप्तकर्ता की तुलना में उच्च कर स्लैब में आता है) और आपको तदनुसार कर लगाया जाएगा. लेकिन, यदि आप अपनी पत्नी/पति के पीपीएफ खाते में कोई भी राशि निवेश करते हैं, तो कोई क्लबिंग प्रावधान लागू नहीं होगा क्योंकि पीपीएफ खाते पर अर्जित ब्याज पूरी तरह से कर-मुक्त है. इस प्रकार, पीपीएफ कर नियोजन के लिए एक बहुत अच्छा माध्यम है.

5) एक बार जब पीपीएफ खाता परिपक्व (mature) हो जाता है, तो खाताधारक के पास एक बार में 5 साल के लिए इसकी परिपक्वता अवधि बढ़ाने का विकल्प होता है और ऐसे विस्तार (extensions) कई बार किए जा सकते हैं. यहाँ एकमात्र शर्त यह है कि विस्तार का अनुरोध खाते की परिपक्वता या विस्तारित परिपक्वता की तारीख से एक वर्ष के भीतर किया जाना चाहिए. यदि कोई व्यक्ति परिपक्वता/विस्तारित परिपक्वता के बाद निर्दिष्ट समय के भीतर अपने पीपीएफ खाते का विस्तार करने में विफल रहता है, तो भी वह खाते में कोई और राशि जमा किए बिना अपना खाता जारी रख सकता है और खाते में करमुक्त ब्याज जमा होता रहेगा !!!!

इसलिए, भले ही आप परिपक्व होने के बाद अपने पीपीएफ खाते का विस्तार (extend) करना नहीं चाहते हैं, जब तक आप खाता बंद नहीं करते हैं, तब तक शेष राशि पर (कोई भी राशि जमा किए बिना) कर-मुक्त ब्याज जमा होता रहेगा.

6) यदि आप किसी एक या अधिक वर्षों में पीपीएफ खाते में न्यूनतम राशि रूपये 500 जमा करना चूक जाते है तो उस स्थिति में आपका खाता निष्क्रिय हो जायेगा. ऐसे निष्क्रिय खातों को पुन: सक्रिय किया जा सकता है. इसके लिए आपको जितने वर्षों की चूक हुई है उन प्रत्येक वर्ष के लिए रुपये 50 की पेनल्टी एवं प्रत्येक वर्ष के लिए न्यूनतम रूपये 500 की राशि जमा करनी होगी.

अत: यदि आपका खाता निष्क्रिय हो गया हो तो भी आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है और आप अपना खाता सक्रिय करवा सकते हैं.

अत: किसी भी करदाता के लिए, उसकी आयु के बावजूद (irrespective of age), अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी अपने पीपीएफ खाते को जारी रखना और प्रत्येक वर्ष निर्दिष्ट सीमा (जो वर्त्तमान में रुपये 1.5 लाख है) के भीतर अधिकतम राशि जमा करके उस पर कर-मुक्त ब्याज अर्जित करना उनके हित में होगा.

मुझे विश्वास है कि अब आप अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए पीपीएफ खाता रखने के महत्व के बारे में समझ गए होंगे.

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त तथ्यों के द्वारा पिछले साल 90 वर्ष की आयु के रिश्तेदार को एक नया पीपीएफ खाता खोलने के लिए मैं प्रोत्साहित कर सका !!!!

अस्तु.

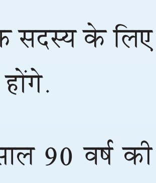

उत्सव ढ़ोलकीया
सहायक प्रबंधक (सेवानिवृत्त)
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

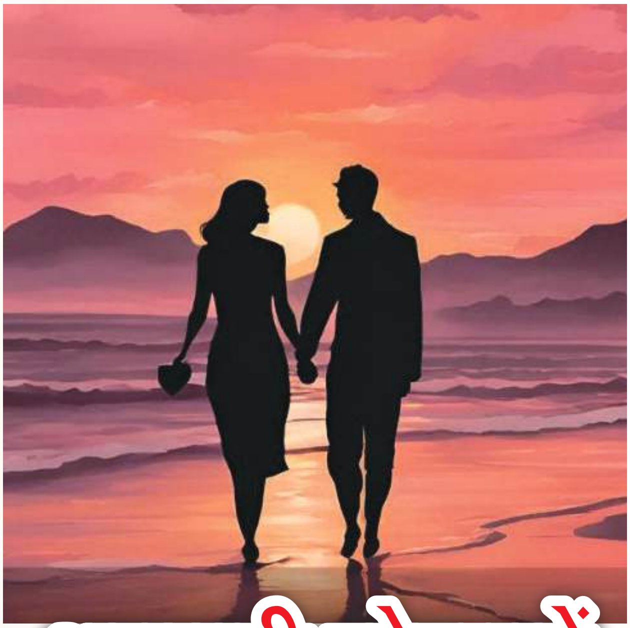

अनकही मोहब्बतें

“मां... मैं छत पर जा रही हूं, कपड़े सुखाने.”

मां की आवाज़ आई,

“अरे दोपहर में क्यों जा रही है छत पर? काली हो जाएगी! भाभी से कह दे, वो डाल देगी कपड़े.”

कपड़े चाहे मां ने धोए हों, या दीदी या भाभी ने... लेकिन सुखाने के लिए तो वही जाएगा. और जैसे ही वो छत पर पहुंचेगी, दो घर छोड़कर रहने वाला वो लड़का भी ठीक उसी वक्त किसी बहाने से छत पर आ जाएगा.

नंगे पांव, तपती धूप में, छत की जलती ज़मीन पर किसी के भी पांव नहीं जलेंगे. कपड़ों के बीच से नज़रें मिलेंगी, एक हल्की सी मुस्कान होगी, और बस... पूरा दिन खूबसूरत बन जाएगा.

कुछ महीनों बाद लड़की की डोली उठेगा. वो ही लड़का, जो छत से मुस्कुराता था, आज शादी के हर काम में सबसे आगे दौड़ता मिलेगा.

ज़िंदगी के किसी मोड़ पर, जब भी दोनों अपनी-अपनी छत पर खड़े होंगे, एक पल को ज़रूर सोचेंगे -

“क्या वो मुझे अब भी याद करता होगा?”

शायद हां... शायद नहा. पर उस वक्त की याद, आज भी दोनों के दिल में सिहरन सी छोड़ जाती होगा.

वो लड़की फोटो स्टूडियो में आई थी - अपनी एक फोटो खिंचवाने. लड़का कैमरे के पीछे था. फोटो खींचते वक्त दोनों की निगाहें मिला. लड़की थोड़ी सकुचाई, मुस्कुराई, फिर शरमाई भा.

जब दो दिन बाद वो फोटो लेने आई, तो देखा कि सात की जगह बस छह कॉपियां था. एक नजर उस फोटोग्राफर से मिली, फिर स्टूडियो के मालिक से - और बिना कुछ कहे, पैसे देकर लौट आई.

घर आकर बार-बार वो एक फोटो देखती रहा. कभी किताबों के बीच छुपाकर, तो कभी तकिए के नीचे रखकर.

आज बरसों बाद भी वो फोटो उसके पास है. बेटी ने अचानक पूछा, “मां, इस फोटो से इतना प्यार क्यों है?”

वो कुछ नहीं बोली, बस मुस्कुरा दी - शायद आज भी उस फोटोग्राफर के पर्स में मेरी यही तस्वीर रखी हो.

उधर वो फोटोग्राफर अपनी बीवी को वो फोटो दिखा कर कह रहा था देखो मेरा पहला प्यार....

नई नवेली दुल्हन पहली बार ससुराल आई था. अपने पति का चेहरा भी ठीक से नहीं देखा था. घर की दीवारें, रास्ते - सब अनजाने थे. और तभी आया उसका नटखट सा देवर दिन-रात बस भाभी के पीछे. “भाभी के बिना खाना नहीं खाऊंगा.” “भाभी मेरे साथ विलायत चलेंगा.” “ये किसी की दुल्हन नहीं है, ये तो मेरी भाभी है!” सब हँसते, पर भाभी की आंखों में अलग ही कुछ एहसास था.

सिर्फ दो रोज बाद देवर बंगलौर चला गया. देवर ने कई खत लिखे - हर एक में “भाभी मां” लिखा. भाभी सब पढ़ती पर कभी जवाब नहीं दिया. देवर बैंगलौर से ही विलायत चला गया.

बरसों बाद जब लौटा तो दौड़ कर भाभी को गले से लगा दिया. देवरानी ने पैर छुए और बताया कि ऐसा कोई दिन नहीं बीता जब आपको याद नहीं करते ये. एक पेटी भर के सिर्फ अपनी भाभी के लिए सामान लाए है.

रोज़ स्कूल जाते हुए वो लड़का दिखता था. वो साइकिल से होता और लड़की पैदल -कंधे पर बैग, बालों की दो चोटी, और मन में हलचल.

सातवीं कक्षा से शुरू हुआ वो सिलसिला, जहां कोई नाम नहीं था, कोई वादा नहीं, बस चुपचाप मिलती नज़रें.

नज़रें जो मिलती थीं, फिर झुक जाती था. लेकिन वो धड़क उठता था. शब्द नहीं होते थे, फिर भी कुछ कह जाता था.

सर्दियों की सुबहों में, जब वो लड़का स्वेटर के अंदर गर्दन छुपाकर निकलता - और लड़की स्कार्फ में आधा चेहरा ढांक कर. चारों आँखें जानती थीं, आज भी एक-दूसरे को देखा.

बारहवीं तक वही चुप्पी रहा. वो शायद कहना चाहता था, वो भी सुनना चाहती थी - पर हिम्मत किसी में नहीं था.

फिर एक दिन, अचानक - उसे देखा, एक लड़की के साथ.

वो सजी हुई थी, घूंघट में था. वो उसका हाथ थामे हुए था.

शायद उसकी शादी हो चुकी था. लेकिन जब नज़रें मिलीं –

वो अब भी वैसी ही थी.... बिना बोले, बिना कहे, वैसी ही गुमसुम सा.

उसके बाद भी.... कभी मंदिर में, कभी बाज़ार में, तो कभी किसी शादी में - नज़रें मिलती रही.... थोड़ी बुझी हुई, थोड़ी सवालों से भरी हुई पर ये सवाल कभी जबां पर नहीं आए. होठों पर गोया मुस्कुराहट जरूर यदा कदा आ जाती था. कुछ रिश्ते अधूरे रहकर भी मुकम्मल हो जाते हैं.

डिम्पल माहेश्वरी
वरिष्ठ प्रबंधक
मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
आपके सपने पूरे करें सेंट विद्यार्थी लोन के साथ
सभी शैक्षणिक खर्चों के लिए संपूर्ण कवरेज
₹50 लाख तक का लोन उपलब्ध
अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ाएं।
GIVE US A MISSED CALL FOR LOAN ASSISTANCE
922 390 1111
CONNECT US ON WHATSAPP AT
998 097 1256
*Terms & Conditions apply
www.centralbankofindia.co.in

आपका सच्चा जीवन साथी: आपका शरीर

निरंतर परिवर्तन और नश्वरता की इस दुनिया में, हम अक्सर खुद को रिश्तों, संपत्तियों और भूमिकाओं से बांध लेते हैं - माँ और पिता, पति और पत्नी, बेटा और बेटी, दोस्त और साथी। ये बंधन, हालांकि बहुत ही संजोए हुए हैं, शाश्वत नहीं हैं। लोग हमारे जीवन में आते हैं और चले जाते हैं; भूमिकाएँ बदलती हैं, परिस्थितियाँ विकसित होती हैं, और जीवन का ताना-बाना लगातार नया होता रहता है। लेकिन एक साथी है जो आपकी पहली साँस से लेकर आखिरी साँस तक आपके साथ रहता है - आपका शरीर।

बचपन से लेकर बुढ़ापे तक, आपका शरीर ही आपका एकमात्र निरंतर साथी होता है। इसमें आपके विचार, भावनाएँ, यादें और सपने समाहित होते हैं। यह आपको खुशियों और दुखों, उपलब्धियों और असफलताओं, प्यार और नुकसान के बीच ले जाता है और जबकि दूसरे आपके साथ चल सकते हैं, आपका समर्थन कर सकते हैं और आपसे बहुत प्यार कर सकते हैं, आपके शरीर में आपके अलावा कोई नहीं चल सकता। जब बीमारी आती है, जब थकान हावी हो जाती है, जब शरीर उपेक्षा से दर्द करता है या देखभाल से ऊर्जा से भर जाता है, तो यह आप ही हैं - और केवल आप ही हैं - जो वास्तव में इसका अनुभव करते हैं।

आपके प्रियजन आपके लिए चिंता कर सकते हैं, आपको दिलासा दे सकते हैं और आपके लिए त्याग भी कर सकते हैं, लेकिन वे आपका दर्द महसूस नहीं कर सकते, आपका बोझ नहीं उठा सकते व आपके लिए आपकी सेहत बहाल नहीं कर सकते। आपके शरीर की जिम्मेदारी पूरी तरह से आपके हाथों में है। आप जो भी चुनाव करते हैं - आप क्या खाते हैं, कैसे चलते हैं, कैसे आराम करते हैं, कैसे सोचते हैं और कैसे तनाव का प्रबंधन करते हैं - वह आपके स्वास्थ्य की नींव रखता है।

जिस तरह एक वफ़ादार दोस्त चुपचाप आपके साथ खड़ा रहता है, बदले में कुछ भी उम्मीद नहीं करता, उसी तरह आपका शरीर भी हर दिन आपके लिए मौजूद रहता है। जब आप सोते हैं तब भी यह सांस लेता है। जब चोट लगती है तो यह चुपचाप ठीक हो जाता है। जब अनदेखा किया जाता है तो यह चुपचाप सहता है। लेकिन हर रिश्ते की तरह, यह इस बात पर प्रतिक्रिया करता है कि इसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। जितना अधिक आप अपने शरीर से प्यार करते हैं और उसकी देखभाल करते हैं, उतना ही यह भी आपको प्यार करता है और आपका समर्थन करता है.

आपका शरीर आपका सच्चा घर है - इस जीवन में आपकी आत्मा का स्थायी पता आपका घर नहीं, आपकी नौकरी नहीं, आपका बैंक बैलेंस नहीं, बल्कि आपका भौतिक अस्तित्व ही वह है जो वास्तव में आपका है। आप अपने स्वास्थ्य को दूसरों को नहीं सौंप सकते। आप अपनी सेहत को दूसरों को नहीं सौंप सकते। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विरासत में लिया जा सके, उधार लिया जा सके या उपहार में दिया जा सके। यह ऐसी चीज़ है जिसे आपको इरादे, अनुशासन और प्यार से पोषित करना चाहिए।

स्वस्थ्य जीवन : आपकी पवित्र जिम्मेदारी

आधुनिक दुनिया में, जहाँ सफलता, पहचान और धन की खोज में हमारा बहुत सारा समय और ऊर्जा खर्च हो जाती है, स्वास्थ्य अक्सर पीछे छूट जाता है। लेकिन इस बुनियादी सच्चाई को याद रखें: स्वास्थ्य के बिना, बाकी सब कुछ अपना मूल्य खो देता है। पैसा कमाया और खोया जा सकता है। अवसर आते हैं और चले जाते हैं। रिश्ते पनप सकते हैं या फीके पड़ सकते हैं, लेकिन आपका शरीर, एक बार टूट जाने के बाद, मरम्मत से परे हो जाता है, तो उसे बदला नहीं जा सकता।

पैसा आता है और चला जाता है, लेकिन खोया हुआ स्वास्थ्य हमेशा वापस नहीं पाया जा सकता - चाहे आप कितना भी भुगतान करने को तैयार हों।

- **रिश्तेदार आपका समर्थन करते हैं**, लेकिन वे आपकी जीवन शक्ति को बहाल नहीं कर सकते।
- **दोस्त आपका मनोबल बढ़ा सकते हैं**, लेकिन वे आपके दर्द को ठीक नहीं कर सकते।
- **डॉक्टर आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं**, लेकिन वे आपके लिए आपकी जीवनशैली नहीं जी सकते।

आत्म-देखभाल स्वार्थ नहीं है - यह आत्म-सम्मान है। आपकी शारीरिक और मानसिक सेहत ही वह जड़ है जिससे आपके जीवन के सभी अन्य पहलू विकसित होते हैं। जब आप स्वस्थ होते हैं, तो

आप अधिक दे सकते हैं, अधिक प्यार कर सकते हैं, अधिक जी सकते हैं।

स्वस्थ जीवन के स्तंभ

सच्चा स्वस्थ्य एक एकल अभ्यास नहीं बल्कि जीवन जीने का एक समग्र तरीका है। यह शरीर, मन और आत्मा के बीच एक सतत संवाद है। यहाँ सात आधारभूत स्तंभ दिए गए हैं जो एक स्वस्थ, संतुलित जीवन को बनाए रखते हैं:

1. फेफड़ों के लिए प्राणायाम

गहरी साँस लेने के व्यायाम आपके शरीर को ऑक्सीजन देते हैं, आपके तंत्रिका तंत्र को शांत करते हैं, और आपके मन को केंद्रित करते हैं। हर दिन बस कुछ मिनट आपकी ऊर्जा और स्पष्टता को बदल सकते हैं।

2. मन के लिए ध्यान

शांत मन स्वस्थ शरीर का प्रवेश द्वार है। ध्यान आंतरिक शांति पैदा करता है, तनाव हार्मोन को कम करता है, और भावनात्मक लचीलापन लाता है, जिससे मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से स्वस्थ्य में सुधार होता है।

3. शरीर के लिए योग और व्यायाम

शरीर को गति के लिए डिज़ाइन किया गया है, योग, स्ट्रेचिंग, शक्ति प्रशिक्षण या खेल के माध्यम से। नियमित गतिविधि मांसपेशियों को मजबूत, जोड़ों को लचीला और हृदय को सक्रिय रखती है।

4. दिल के लिए टहलना

सबसे सरल लेकिन सबसे शक्तिशाली व्यायामों में से एक, टहलना रक्त संचार को बेहतर बनाता है, हृदय स्वस्थ्य को बेहतर बनाता है, पाचन में सहायता करता है और मूड को बेहतर बनाता है। रोजाना टहलना आपके दिल और दिमाग के लिए एक उपहार है।

5. आंतों के लिए अच्छा भोजन

आप वही हैं जो आप खाते हैं। संपूर्ण खाद्य पदार्थों, सब्जियों, फलों, नट्स, बीजों और स्वच्छ प्रोटीन से भरपूर आहार आपकी कोशिकाओं को ऊर्जा देता है, आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और जीवन शक्ति को बनाए रखता है।

6. आत्मा के लिए अच्छे विचार

मन वास्तविकता को आकार देता है। सकारात्मक, दयालु और आभारी विचार आपके भावनात्मक स्वास्थ्य को पोषण देते हैं और आपके जीवन में सद्भाव को आकर्षित करते हैं। नकारात्मकता आत्मा को कमजोर करती है, जबकि सकारात्मकता उत्थान और सशक्त बनाती है।

7. जीवन के लिए अच्छे कर्म

आप जो देते हैं, वही पाते हैं। दयालुता, ईमानदारी और उदारता के साथ जीने से शांति और उद्देश्य मिलता है। अच्छे कर्म दिल को शुद्ध करते हैं और अच्छाई की लहर पैदा करते हैं जो अदृश्य तरीकों से आपके पास लौटती है।

अंतिम विचार : स्वास्थ्य को अपना धर्म बनायें

आपका शरीर सिर्फ़ इस्तेमाल की जाने वाली मशीन नहीं है, न ही कोई ऐसी चीज़ है जिसे सजाया जाए, बल्कि यह एक पवित्र पात्र है जो आपके जीवन का उद्देश्य पूरा करता है। इसके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करें। इसकी फुसफुसाहट को सुनें इससे पहले कि वे चीखें बन जाएं। इसकी सीमाओं का सम्मान करें। इसकी ताकत का जश्न मनाएं। इसके घावों को कोमलता से ठीक करें।

जब दुनिया शांत हो जाती है और यात्रा अपने अंत के करीब होती है, तो यह आपका शरीर ही होता है जो आपकी अंतिम सांस तक आपके साथ चलता है। उस पल में, कोई भी धन-संपत्ति, कोई भी उपाधि, कोई भी संपत्ति मायने नहीं रखती। जो मायने रखता है वह यह है कि आपने उस सच्चे साथी के साथ कैसा व्यवहार किया जिसने कभी आपका साथ नहीं छोड़ा। स्वास्थ्य कोई लक्ष्य नहीं है। यह जीवन जीने का एक तरीका है। और यह जीवन आपकी सबसे बड़ी विरासत है।

तो आज से ही शुरुआत करें। अपने शरीर को पोषण दें। अपने मन को शांत करें। अपने दिल को प्यार से भरें। और हर दिन को उस जीवन और शरीर के लिए कृतज्ञता की प्रार्थना के रूप में जिएँ जो आपको दिया गया है।

सुरेश कुमार साहू
विपणन अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

व्यंजन विधि

तिखट पुरी (मसाला पुरी) - एक स्वादिष्ट महाराष्ट्रीयन नाश्ता

सामग्री: (24-25 मध्यम पूरी के लिए)

- गेहूं का आटा - 2 कप
- बेसन (चने का आटा) - 1 छोटी चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर - 1 बड़ा चम्मच
- धनिया पाउडर - 1 बड़ा चम्मच
- जीरा - अजवाइन (दरदरा पिसा हुआ) - 1/2-1/2 छोटी चम्मच
- तिल - 1 छोटी चम्मच
- हल्दी पाउडर - 1/2 छोटी चम्मच
- नमक - स्वादानुसार
- पानी - लगभग 3/4 कप
- तेल - तलने के लिए

विधि:

1. एक बर्तन में गेहूं का आटा लें।
2. उसमें बेसन, लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, जीरा-अजवाइन पाउडर, तिल, हल्दी पाउडर और नमक डालें।
3. सभी सूखी सामग्री को अच्छे से मिलाएं।
4. थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए सख्त आटा गूंथ लें। एक साथ ज्यादा पानी न डालें।
5. आटे को थोड़ा सा तेल लगाकर चिकना करें और ढककर 30-45 मिनट तक रखें।
6. फिर आटे को दोबारा हल्का सा गूंथ लें।
7. मध्यम मोटी चपाती बेलें। न ज्यादा पतली, न ज्यादा मोटी।
8. ढक्कन से पुरी काट लें या छोटी-छोटी लोइयां बनाकर पुरी बेल लें।
9. जब तक पुरी बेलें, तेल गरम करें।
10. गरम तेल में एक पुरी डालें, चम्मच से हल्का दबाएं ताकि फूले।
11. दोनों तरफ से सुनहरा तल लें।
12. पूरी निकालकर टिशू पेपर पर रखें।
13. सभी पूरी इसी तरह तलें।

टिप्स:

- तिखट पुरी चाय के साथ बढ़िया लगती है।
- इसे 7-8 दिन तक स्टोर किया जा सकता है - यात्रा के लिए आदर्श नाश्ता।

बेसन पुरी लाड़ू

मिठाई,

महाराष्ट्रीयन, भारतीय

25 लाड़ू

लगभग 1 घंटा 10 मिनट

सामग्री:

आटे के लिए:

- बेसन - 300 ग्राम
- हल्दी पाउडर - 1/2 छोटी चम्मच
- तेल या घी (पिघला हुआ) - 1 बड़ा चम्मच
- पानी - लगभग 120 ग्राम से थोड़ा अधिक (गूंथने के लिए)
- हाथ और आटा चिकना करने के लिए थोड़ा तेल
- देसी घी - तलने के लिए

अन्य सामग्री:

- किशमिश - 25 ग्राम
- पिस्ता (लंबे कटे हुए) - 10 ग्राम
- पिघला घी - 4 बड़े चम्मच

चाशनी के लिए:

- चीनी - 300 ग्राम
- पानी - 150 ग्राम
- केसर - एक चुटकी
- इलायची पाउडर - 1 छोटी चम्मच
- जायफल (कद्दूकस किया हुआ) - 1/2

विधि:

1. एक बर्तन में बेसन, और तेल मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए सख्त आटा गूंथ लें। बेसन चिपकता है, इसलिए हाथों पर थोड़ा तेल लगाकर काम करें।
2. आटे को बेलनाकार आकार में रोल करें और नींबू जितनी लोइयाँ बना लें।
3. लोइयों को तेल से चिकना कर 2-3 मिमी मोटी पुरी बेलें। आकार सही होना जरूरी नहीं।
4. सभी पूरियों को घी में धीमी आंच पर हल्का सुनहरा होने तक तलें।
5. तली हुई पूरियाँ एक प्लेट पर निकालकर ठंडी होने दें और फिर छोटे टुकड़े करके हाथों से मसलकर चूरा बना लें।
6. इस चूरे को दरदरा पीस लें (सूजी जैसा होना चाहिए)।
7. इसमें किशमिश, आधे पिस्ता और 4 बड़े चम्मच पिघला घी डालकर अच्छे से मिलाएं।

चाशनी बनाना:

8. एक पैन में चीनी और पानी डालकर मध्यम आंच पर पकाएं। जब चाशनी गाढ़ी होने लगे, एक बूंद प्लेट पर डालकर चैक करें - यदि वह बहती नहीं, तो तैयार है।
9. चाशनी में इलायची, जायफल और केसर मिलाएं।
10. अब यह चाशनी धीरे-धीरे पुरी चूरे के मिश्रण में मिलाएं। ध्यान दें कि मिश्रण गीला परंतु चिपचिपा न हो।

लाडू बनाना:

11. मिश्रण को ढककर 1 घंटे या पूरी रात के लिए रख दें।
12. फिर, हाथों में थोड़ा घी लगाकर मिश्रण से अखरोट जितने गोले बनाएं और ऊपर पिस्ता लगाएं।
13. लाडू को एक सूखे और एयरटाइट डिब्बे में स्टोर करें। यह एक महीने तक खराब नहीं होते।

नोट्स:

- चाशनी अधिक हो जाए तो धीरे-धीरे डालें, ज़रूरत से ज़्यादा नहीं।
- अगर मिश्रण सूखा लगे, थोड़ा घी या चाशनी और मिलाएं।
- लाडू को हाथ से अच्छे से दबाकर गोल बनाएं ताकि वो टूटें नहीं।

सुश्री अनुजा सूर्यवंशी
प्रबंधक - पुस्तकालय
एसपीबीटी महाविद्यालय

राजभाषा गतिविधियां

मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का

दिनांक 17 फरवरी, 2025 को संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह, जयपुर में माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान श्री भजनलाल शर्मा जी और गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी के करकमलों से सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी और बैंक नराकास पणजी को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 17.02.2025 को जयपुर में मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया. इस सम्मेलन में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के संयोजन वाली नराकास (बैंक) भोपाल को वर्ष 2023-24 में राजभाषा सम्मान के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

अर्द्ध-वार्षिक समीक्षा बैठक

नराकास, अयोध्या द्वारा आंतरिक कामकाज में "हिंदी का अमल अभियान" में सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दिनांक 28.01.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति समस्तीपुर द्वारा राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु समस्तीपुर शाखा को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

SAGARMALA
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
छ:माही समीक्षा बैठक

नराकास गांधीधाम द्वारा हमारे बैंक की गांधीधाम शाखा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दिनांक 27 जनवरी 2025 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति वडोदरा द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मान समारोह में हमारे बैंक को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दक्षिण पश्चिम रेलवे
SOUTH WESTERN RAILWAY

क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली को भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु बैंक श्रेणी में राजभाषा शील्ड (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया.

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION
समिति की छः माही बैठक

दिनांक 24.01.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालाघाट की बैठक का आयोजन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण केंद्र, बालाघाट में किया गया. इस अवसर पर हमारे बैंक को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा शील्ड (द्वितीय पुरस्कार) एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया.

राजभाषा गतिविधियां

BHUBANESWAR
57वीं छमाही बैठक

दिनांक 21.01.2025 को भुवनेश्वर नराकास द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर स्थित अनंतपुर शाखा को भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्तकृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ.

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 17 जनवरी 2025 को हमारे केन्द्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया.

समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण
दिनांक 15.01.2025 से 17.01.2025 तक
समन्वयक :

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण
मुंबई : दिनांक 15.01.2025 से 17.01.2025 तक
समन्वयक :

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण
मुंबई : दिनांक 15.01.2025 से 17.01.2025 तक
समन्वयक :
हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन

राजभाषा प्रदर्शनी
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के विभिन्न अंचलों द्वारा महिला दिवस का आयोजन

अहमदाबाद

कोलकाता

गुवाहाटी

चंडिगढ़

चेन्नई

दिल्ली

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के विभिन्न अंचलों द्वारा महिला दिवस का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय
महिला

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
CENT QUEEN

भोपाल

वरिष्ठ जन सेवा केन्द्र

मुंबई

रायपुर

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

लखनऊ

हैदराबाद

केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियां

केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियां

MARCH FORWA... TO PROGRESS
अंतरराष्ट्रीय
महिला दिवस
समारोह
International
Women's Day
Celebrations
8th March, 2025

Health
eck-Up f
emal
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

मानननीय अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याण संबंधी संसदीय समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय राँची का अध्ययन दौरा.

श्री एम.वी.राव
प्रबंधन निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

दिनांक 09 जनवरी 2025 को जबलपुर में टाउन हॉल मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

Galaxy S24 Ultra
30 March 2025 7:01 pm

आईपीएल में विजेता टीम के खिलाड़ी को पुरस्कृत करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही.

REGIONAL OFFICE KOC
टाउन हॉल मीटिंग
Town Hall M
23-12-2

क्षेत्रीय कार्यालय कोचिन में आयोजित टाउन हॉल मीटिंग में क्षेत्रीय कार्यालय कोचिन की ई-पत्रिका गोश्री वाणी का विमोचन करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही, अंचल प्रमुख चेन्नै श्री के. शशिधर एवं श्रेत्रीय प्रमुख कोचिन श्री राहुल सिंहल.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी स्थायी समि
MEETING WITH STANDING COMMITTEE ON SOCIAL JUSTICE A
संयोजक

दिनांक 18.01.2025, संसदीय स्थायी समिति की बैठक के दौरान तिरुवनन्तपुरम क्षेत्र की ई-पत्रिका अनन्तपुरी वाणी का विमोचन करते हुए सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी स्थायी संसदीय समिति के अध्यक्ष माननीय श्री पी.सी.मोहन, संसदीय स्थायी समिति के अन्य सदस्य, हमारे बैंक के कार्यपालक निदेशक माननीय श्री विवेक वाही, आदरणीय अंचल प्रमुख श्री के. शशिधर, उप अंचल प्रमुख श्री एन. बालचंद्रन, क्षेत्रीय प्रमुख श्री कफ़ील अहमद व अन्य उपस्थित गणमान्य अधिकारी.

आंचलिक कार्यालय हैदराबाद
हार्दिक स्वागत HEA
श्री विवेक वाही/ SH
कार्यपालक

आंचलिक कार्यालय हैदराबाद में आयोजित टाउन हॉल मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
पुणे क्षेत्र
कार्यपालक निदेशक
मा. श्री एम. वी. मुरली कृष्ण

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा जी की अध्यक्षता में पुणे में, टाउन हॉल मीटिंग का आयोजन किया गया. मंच पर आसीन श्री एम वी मुरली कृष्णा, कार्यपालक निदेशक महोदय एवं अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह एवं क्षेत्रीय प्रमुख पुणे सुश्री आशा कोटस्थाने.

पुणे अध्ययन दौरे में कॉर्पोरेट ग्राहक बैठक में सहभागिता करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
Zonal Office Pune

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा द्वारा पुणे अंचल के सोलापुर क्षेत्रीय कार्यालय परिसर का वर्चुअल उदघाटन किया गया.

श्री एम.वी. मुरली कृष्णा
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
श्री एम.वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक
की अध्यक्षता में आयोजित
टाउन-हॉल मीटिंग

भोपाल में माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा जी की अध्यक्षता में टाउन हॉल मीटिंग का आयोजन किया गया.

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे जी ने दिनांक 23 जनवरी,2025 को पणजी क्षेत्रीय कार्यालय मे उपभोक्ता मामले,खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्ययन दौरे में बैंक का प्रतिनिधित्व किया साथ ही उनकी अध्यक्षता में ऋण शिविर (Credit Camp) का भी आयोजन किया गया

Heartie
Consumer
ऋण शिविर
CAMP)
आपक
(CREDIT CAMP)
में
क स्वागत है

माननीय संसदीय समिति की साक्ष्य एवं आलेख उप समिति द्वारा दिनांक 28 फरवरी 2025 को हमारे क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

अब ज़िंदगी आसान

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सुपर ऐप के साथ!

आसान बैंकिंग
डिपॉजिट, लोन और भुगतान
कभी भी, कहीं भी करें.

शॉपिंग पर खास फायदे
यात्रा, शॉपिंग और मनोरंजन
पर शानदार छूट पाएं.

10:30 AM
100%
Cent eeZ
Mobile App
की हो रही है
शानदार शुरुआत!

स्मार्ट निवेश
म्युचुअल फण्ड आईपीओ
और बेहतरीन निवेश
विकल्प अपनाएं.

सुरक्षित भविष्य
जीवन और अन्य बीमा
कवर से निश्चिंत रहें.

नया वित्तीय वर्ष
नए ऐप के साथ!

Ventures

अपनी सुरक्षा के लिए सावधानी बरतें,
Cent eeZ ऐप सिर्फ इन आधिकारिक
स्रोतों से डाउनलोड करें

GET IT ON Google Play
Download on the App Store

किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें
और व्हॉट्सऐप किसी भी अनजान स्रोत से
APK फाइल डाउनलोड न करें.

अपनी डेबिट/क्रेडिट कार्ड की सीवीवी,
पिन जैसी गोपनीय जानकारी किसी से साझा न करें.

हमारी वेबसाइट पर डिजिटल माध्यम से बचत खाता खोलें – www.centralbankofindia.co.in

टोल-फ्री नंबर – **1800 30 30**